Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 77 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, गुरुवार 05 सितंबर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अच्छे लोग दूसरों के लिए जीते हैं, जबकि दुष्ट लोग दूसरों पर जीते हैं।

Good People live for others while the bad people live on others.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

आज गुरुवार को होने वाला जनदर्शन स्थगित

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय का हर सप्ताह गुरुवार को होने वाला जनदर्शन इस गुरुवार 5 सितंबर को अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया है।

हाई स्कूल व हायर सेकेण्डरी स्कूल परीक्षा के लिए फार्म भरने की तिथि में वृद्धि

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर द्वारा संचालित हाई स्कूल और हायर सेकेण्डरी स्कूल स्वाध्यायी परीक्षा 2025 के परीक्षा हेतु आवेदन प्रत्र की तिथि में वृद्धि की गई है। अब विलंब शुल्क के साथ परीक्षार्थी 9 सितम्बर 2024 से 25 सितम्बर 2024 तक अपना आवेदन फार्म भर सकते हैं।

विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया ने राहुल गांधी से की मुलाकात

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा में विधानसभा चुनाव की तैयारियां जोरों पर हैं। कुछ दिनों से अटकलें लगाई जा रही हैं कि पहलवान विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। इस बीच बुधवार को विनेश फोगाट और बजरंग पुनिया ने विपक्ष के नेता राहुल गांधी से मुलाकात की। इसके बाद अब कयास लगाए जा रहे हैं कि दोनों पहलवानों की टिकट पक्की हो सकती है। दरअसल, कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लडऩे की अटकलों के पीछे की वजह यह मानी जा रही है।

छत्तीसगढ़ को मिली 8,46,931 प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति : सीएम विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार माना

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में मोदी की एक और गारंटी पूरी होने वाली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ को बड़ी सौगात दी है। विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री आवास योजना का मुद्दा गर्माया था। इस पर बीजेपी ने मोदी की गारंटी दी थी। अब यह गारंटी पूरी हो गई है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने बुधवार को अपने निवास कार्यालय में प्रेस से बात करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना गरीबों के कल्याण की योजना है। उन्होंने कहा कि पिछले पांच साल में कांग्रेस की सरकार में प्रधानमंत्री आवास से वंचित लोगों तक हम अपनी बात पहुँचाना चाहते हैं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रेस वार्ता में बताया कि छत्तीसगढ़ को भारत सरकार द्वारा 8 लाख 46 हजार 931 प्रधानमंत्री आवासों की स्वीकृति प्राप्त हुई है। इसके लिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार माना। साथ ही ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान का भी धन्यवाद किया।

मुख्यमंत्री साय ने इसे प्रदेश के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के तहत यह स्वीकृति छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस योजना के तहत लाखों परिवारों को अपने घर का सपना साकार होगा। इससे उनके जीवन में स्थिरता और सुरक्षा का भाव उत्पन्न होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गरीब और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए सरकार निरंतर कार्य कर रही है। छत्तीसगढ़ को प्राप्त यह आवास की स्वीकृति हमारे राज्य के विकास में एक मील का पत्थर साबित होगी।

मुख्यमंत्री साय ने बताया कि पिछले 5 वर्षों में छत्तीसगढ़ के 18 लाख से अधिक गरीब परिवार प्रधानमंत्री आवास योजना से वंचित रह गए थे क्योंकि तत्कालीन सरकार ने इस योजना के लिए आवश्यक राज्यांश 40 प्रतिशत जमा नहीं किया था। इस वजह से इन गरीब परिवारों का हक छीना गया था। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारी सरकार ने 13 दिसंबर 2023 को शपथ ली और अगले ही दिन 14 दिसंबर को हमारे पहले कैबिनेट बैठक में 18 लाख प्रधानमंत्री आवासों की स्वीकृति प्रदान कर दी गई। राज्यांश की व्यवस्था भी तुरंत की गई। मुख्यमंत्री ने आगे बताया कि नए वित्तीय वर्ष के बजट में छत्तीसगढ़ को 8 लाख 46 हजार 931 प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति भारत सरकार से मिली है, जिसमें एसईसीसी 2011 के अंतर्गत 6 लाख 99 हजार 331 आवास और 1 लाख 47 हजार 600 आवास प्लस शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को धन्यवाद दिया और कहा कि मैं छत्तीसगढ़ के 3 करोड़ जनता और विशेषकर प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वित होने वाले सभी लोगों की तरफ से प्रधानमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा और दुर्ग विधायक गजेंद्र यादव उपस्थित थे। साथ ही मुख्यमंत्री साय ने प्रधानमंत्री जनमन योजना का भी जिक्र किया करते हुए कहा कि विशेष पिछड़ी जनजाति जिन्हें राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र भी कहते हैं उनके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 24 हजार 64 आवास की स्वीकृति की गई है, जिनमें से कई पूर्ण हो चुके हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि जनवरी से लेकर अब तक 1 लाख 99 हजार प्रधानमंत्री आवासों का निर्माण किया जा चुका है और मोदी जी की गारंटी के अनुसार 18 लाख आवासों का निर्माण समयबद्ध रूप से पूरा किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि नियद नेलानार योजना 'आपका अच्छा गांव' के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में नक्सल प्रभावित और आत्मसमर्पित नक्सलियों के लिए भी प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 10,000 से अधिक अतिरिक्त आवासों की स्वीकृति के लिए ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से मांग की गई है, जिसे जल्द ही मंजूरी मिलने की उम्मीद है।

मुख्यमंत्री ने गुरूजनों को शिक्षक दिवस पर दी शुभकामनाएं

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के अवसर पर सभी शिक्षकों और प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। मुख्यमंत्री ने अपने बधाई संदेश में कहा कि पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन को हम शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं। डॉ. राधाकृष्णन दार्शनिक और शिक्षक भी रहे हैं। देश को शिक्षा के क्षेत्र में आगे ले जाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षक, शिक्षा के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं। वे उच्च नैतिक मूल्यों को विद्यार्थियों के जीवन में उतारकर अच्छा नागरिक तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आशा है कि डॉ. राधाकृष्णन के पदचिन्हों पर चलते हुए देश और समाज को सकारात्मक दिशा देने में आगे भी शिक्षकगण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे।

सिंगापुर में प्रधानमंत्री का बहना ने राखी बांधकर किया स्वागत, मोदी ने महाराष्ट्रियन धुन पर बजाया ढोल

सिंगापुर (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ब्रुनेई के बाद सिंगापुर पहुंच गए हैं। छह साल बाद पीएम मोदी सिंगापुर पहुंचे हैं। प्रधानमंत्री मोदी का चांगी हवाई अड्डे पर प्रवासी भारतीयों और सिंगापुर के अधिकारियों ने जोरदार स्वागत किया। इस दौरान सिंगापुर में भी पीएम मोदी को बहना का प्यार मिला। एक महिला ने मोदी को राखी बांधकर उनका स्वागत किया। वहीं प्रधानमंत्री ने महाराष्ट्रियन धुन पर जमकर ढोल बजाया, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। पीएम मोदी की एक झलक देखने के लिए बड़ी संख्या में पहुंचे भारतीय समुदाय के लोगों में उनसे हाथ मिलाने की होड़ दिखाई दी।

इससे पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रुनेई पहुंचकर वहां के सुल्तान हाजी हसनल बोल्कैया से मुलाकात कर सिंगापुर के लिए रवाना हो गए थे। इस दौरान दोनों नेताओं की मौजूदगी में भारत और ब्रुनेई के बीच कई समझौते हुए। बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी का यह सिंगापुर का दौरा भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण है। उनका यह दौरा ऐसे समय पर हो रहा है, जब सिंगापुर में सरकार बदल गई है और लॉरेन्स वॉन्ग ने प्रधानमंत्री पद की कमान संभाली है।

पीएम मोदी जैसे ही सिंगापुर के अपने होटल पहुंचे, वहां मौजूद भारतीय समुदाय के लोगों ने उनका जोरदार स्वागत किया। पीएम ने लोगों को ऑटोग्राफ भी दिए। वहीं भरतीय मूल की महिलाओं ने पीएम मोदी को राखी भी बांधी। इस दौरान लोगों में गजब का उत्साह देखने को मिला। भारतीय समुदाय के लोगों के जोश को देखते हुए पीएम मोदी ने भी महाराष्ट्रियन धुन पर ढोल बजाया। इस दौरान 'गणपति बप्पा मोरया' के जमकर जयकारे भी लगे।

जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा दिलाएंगे वापस : राहुल गांधी

जम्मू (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव 2024 को लेकर कांग्रेस ने अपनी प्रचार की शुरुआत कर दी है। कांग्रेस ने पहले चरण के चुनाव प्रचार के लिए स्टार प्रचारक के रूप में राहुल गांधी को उतारा है। जम्मू के रामबन में जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस सांसद राहुल गांधी बीजेपी पर जमकर बरसे और जम्मू-कश्मीर के लोगों को स्टेटहुड वापस दिलाने का वादा किया।

उन्होंने कहा कि बीजेपी आज देश में नफरत फैला रही है। उनका काम नफरत फैलाने का है लेकिन हमारा काम मोहब्बत फैलाने का है। राहुल गांधी ने कहा कि नफरत को मोहब्बत से ही काटा जा सकता है। उन्होंने कहा कि देश में राज्यों का बंटवारा तो कई बार हुआ लेकिन पहली बार स्टेटहुड को छीना गया। जम्मू कश्मीर का स्टेटहुड छीना गया है। राहुल गांधी ने वादा किया है कि वह जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा वापस दिलाएंगे। उन्होंने बीजेपी और केंद्र पर यह कर निशाना साधा कि यहां केवल राज्य को ही समाप्त नहीं किया गया बल्कि लोगों का अधिकार भी छीना गया। राहुल ने कहा कि हम चाहते थे कि पहले आपको राज्य का दर्जा वापस मिले फिर चुनाव हो, लेकिन बीजेपी ये नहीं चाहती है।

छत्तीसगढ़ में शुरू होगा लिवर-किडनी ट्रांसप्लांट

ऑर्गन ट्रांसप्लांट उपकरणों के लिए 6 करोड़ रुपए की मंजूरी

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ में बीजेपी सरकार बनने के बाद जनता सुगम सुविधाए देने लिए सीएम साय के नेतृत्व में काम किए जा रहे है। मिली जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय बहुत जल्द स्वास्थ्य के मामलों में वैश्विक सुविधाएं देने वाला राज्य बनने वाला है। इनमें ऑर्गन ट्रांसप्लांट और बायपास हार्ट सर्जरी जैसी सुविधाएं शामिल होंगी।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल के अनुसार राज्यभर में सुपर स्पेशियलिटी सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए अब राजधानी के डीकेएस अस्पताल में लिवर और किडनी ट्रांसप्लांट की सुविधा जल्द शुरू की जाएगी।उन्होंने कहा कि डीकेएस में पहले ही अत्याधुनिक आईसीयू तैयार किया जा चुका है और लिवर तथा किडनी ट्रांसप्लांट के उपकरणों के लिए 6 करोड़ रुपए भी स्वीकृत किए गए हैं। उन्होंने बताया कि यह सुविधा राजधानी के मरीजों के साथ-साथ आस-पास के राज्यों से आने वाले मरीजों को भी लाभान्वित करेगी। स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल के अनुसार सरकारी अस्पतालों में नई सेवाओं की संख्या बढ़ाई जाएगी. इसमें दूरस्थ परामर्श, अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी. इससे छत्तीसगढ़ के सभी नागरिकों को अत्याधुनिक एवं उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं प्राप्त होंगी।

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने फार्मेसी काउंसिल के आनलाइन पंजीयन सुविधा का किया लोकार्पण

रायपुर (विश्व परिवार)। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने छत्तीसगढ़ स्टेट फार्मेसी काउंसिल के पंजीयन की आनलाइन सुविधा का शुभारंभ किया है। अब फार्मेसी काउंसिल का पंजीयन सिस्टम आनलाइन हो गया है। इससे फार्मेसी छात्र तथा फार्मासिस्टों को पंजीयन अथवा नवीनीकरण के लिए रायपुर स्थित फार्मेसी काउंसिल का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। अब पंजीयन कराने के लिए आनलाइन आवेदन के बाद आवेदक को केवल एक बार दस्तावेजों के वेरीफिकेशन के लिए काउंसिल कार्यालय आना होगा।

कार्यक्रम का लोकार्पण करते हुए स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा कि पंजीयन कार्य के आनलाइन हो जाने से आवेदकों को अब काउंसिल के चक्कर नहीं लगाने होंगे, जिससे उन्हें काफी सहूलियत मिलेगी। उन्होंने कहा कि फार्मासिस्ट डाक्टर और मरीज के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है जिस पर सही दवा एवं खुराक के निर्धारण की जिम्मेदारी होती है। अभी तक फार्मेसी काउंसिल में पंजीयन के लिए राज्य के सभी जिलों के विभिन्न स्थानों के फार्मेसी उत्तीर्ण छात्र फार्मासिस्ट पंजीयन के लिए रायपुर स्थित काउंसिल कार्यालय आते थे। इसी प्रकार पंजीकृत फार्मासिस्टों को नवीनीकरण के लिए रायपुर आना पड़ता था।

सिमडेगा के प्रवास के दौरान केदार कश्यप ने सैकड़ों लोगों को कराया भाजपा में प्रवेश

रायपुर/ जगदलपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ के वन, सहकारिता एवं संसदीय कार्यमंत्री केदार कश्यप झारखंड में विधानसभा चुनाव को लेकर लगातार बैठक कर रहे हैं. राज्य के सिमडेगा में केदार कश्यप की मौजूदगी में प्रधानमंत्री मोदी के लोककल्याणकारी कार्यों व योजनाओं से प्रभावित होकर सैकड़ों लोगों ने भाजपा प्रवेश किया। सिमडेगा के प्रवास के दौरान भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर केदार कश्यप ने चुनावी रणनीति पर चर्चा की. सिमडेगा में आमजनों के भाजपा में प्रवेश को लेकर उन्होंने कहा कि भाजपा की विचारधारा में राष्ट्रवाद और जनकल्याण पर आधारित है. यह पार्टी देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। इस मौके पर उन्होंने कहा, भाजपा ने देश में कई बड़े चुनाव जीते हैं, और केंद्र और राज्यों में सरकार में रही है. यह पार्टी देश के विकास और प्रगति के लिए कई योजनाएं और कार्यक्रम चला रही है. प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश आगे बढ़ रहा है।

सीएसवीटीयू इनक्यूबेशन सेंटर, भिलाई का सफलतापूर्वक विजिट आयोजित

रायपुर (विश्व परिवार)। कॉर्पोरेट प्रशिक्षण एवं परामर्श प्रभाग (सीसीआरसी) और संस्थान नवाचार परिषद (आईआईसी), कलिंगा विश्वविद्यालय ने अपनी आईआईसी गतिविधि पहल के अंतर्गत छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय (सीएसवीटीयू) इनक्यूबेशन सेंटर, भिलाई का सफलतापूर्वक विजिट आयोजित किया।

यह विजिट सीसीआरसी के निदेशक श्री पंकज तिवारी और प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट अधिकारी श्री अरूप हलधर के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। छात्रों के साथ सीएस एवं आईटी विभाग के संकाय सदस्य श्री मनीष नंदी तथा वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग की संकाय सदस्य सुश्री दीपशिखा भी विजिट पर गये।

यह विजिटसुबह 11:00 बजे सीएसवीटीयू इनक्यूबेशन सेंटर के सीईओ श्री अग्रांशु द्विवेदी द्वारा गर्मजोशी से स्वागत के साथ शुरू हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत छात्रों के परिचय से हुई। कलिंगा विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों के कुल 38 छात्रों ने इस यात्रा में भाग लिया, जो स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और विचार से लेकर क्रियान्वयन तक की यात्रा के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने छात्रों को इनक्यूबेशन, स्टार्टअप यात्रा और उभरते उद्यमियों को समर्थन देने के लिए डिज़ाइन की गई कई सरकारी पहलों पर ज्ञानवर्धक सत्र में शामिल किया। उनकी अंतर्दृष्टि ने छात्रों को स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर चुनौतियों और अवसरों की व्यापक समझ प्रदान की।

इस यात्रा का एक उल्लेखनीय क्षण एक अभिनव प्रोटोटाइप का परिचय था – एक एलपीजी गैस रिसाव डिटेक्टर जिसे अलर्ट भेजकर, गैस सिलेंडर को बंद करके और स्वचालित रूप से एक एग्जॉस्ट फैन को सक्रिय करके सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। स्टार्टअप के इस वास्तविक दुनिया के उदाहरण ने छात्रों को सत्र के दौरान चर्चा की गई अवधारणाओं से एक ठोस संबंध प्रदान किया।

इस यात्रा का समापन एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तर सत्र के साथ हुआ, जहाँ छात्रों को श्री अग्रांशु द्वारा अपने प्रश्नों के उत्तर देने का अवसर मिला। सत्र के बाद केंद्र की अत्याधुनिक सुविधाओं का विजिटकिया गया, जिससे छात्रों को उद्यमिता को एक रोमांचक करियर पथ के रूप में मानने के लिए प्रेरित किया गया।

संक्षिप्त समाचार

मनोहर गौशाला से प्रभावित कानून अपीलीय न्यायाधिकरण के सदस्य पहुंचे राजधानी के कार्यालय

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय कंपनी कानून अपीलीय न्यायाधिकरण के सदस्य (तकनीकी) नरेश सालेचा सपरिवार सोमवार को मनोहर गौशाला के रायपुर स्थित कार्यालय पहुंचे। इस दौरान उन्होंने मनोहर गौशाला के ट्रस्टी और जीव जंतु कल्याण बोर्ड के मानद प्रतिनिधि अखिल जैन (पदम डाकलिया) से गौशाला में चल रहे पशु चिकित्सालय निर्माण, गौमूत्र पर हो रहे रिसर्च के साथ ही अन्य विषयों पर विस्तृत चर्चा की। इस दौरान उनका कामधेनु माता के मोमेंटो के साथ सम्मान किया गया। बीते दिनों श्री सालेचा सपरिवार खैरागढ़ स्थित मनोहर गौशाला पहुंचे थे। उन्होंने कामधेनु माता के दर्शन कर यहां होने वाले रिसर्च की जानकारी ली थी। बता दें कि श्री सालेचा 1984 बैच के आईआरएएस हैं। अपनी वर्तमान पोस्टिंग से पहले वे रेलवे बोर्ड में सदस्य वित्त और रेल मंत्रालय में भारत सरकार के पदेन सचिव थे। उन्होंने वाणिज्य में ऑनर्स के साथ स्नातक किया है और उनके पास कानून की डिग्री और प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिग्री यानी एमबीए भी है।

दीक्षार्थी ब्रह्मचारी भाइयों की भव्य गोद भराई एवं बिन्दौरी निकाली गई

कोटा (विश्व परिवार)। परम पूज्य चतुर्थ पट्टाचार्य श्री 108 सुनील सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में दिनांक 13 अक्टूबर 2024 रविवार को संसार शरीर और भोगों से दूर हो दीक्षा लेने वाले ब्रह्मचारी जी श्री भैरु लाल जी कासलीवाल भीलवाड़ा प्रवर समधी (श्री ललित जैन समस्त पाटनी परिवार कोटा) एवं पन्ना लाल जी जैन धमाना मौजमाबाद दीक्षार्थी की गौद भराई एवं बिंदोरी का आयोजन महावीर नगर द्वितीय स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन संतशाला में किया गया। मंदिर समिति के अध्यक्ष दर्पण जी जैन ने बताया कि 4 सितम्बर बुधवार को बिनोली कार्यक्रम प्रातः 8 बजे ललित-फूलकँवर जैन एवं समस्त पाटनी परिवार,पारस सदन 1063, महावीर नगर द्वितीय के आवास पर गोद भराई की गई, उसके बाद दोनो ब्रह्मचारी भाइयों को बग्गी में बिठाया गया।गाजे बाजे के साथ विभिन्न मार्गो से होते हुए जैन मंदिर के समीप स्थित संत भवन में लाया गया। जहां पर सकल दिगंबर जैन समाज समिति के अध्यक्ष विमल जी जैन नांता, कार्याध्यक्ष जे .के. जैन, पारस जी जैन पत्रिका, ललित जी जैन, दर्पण जी जैन, राहुल पाटनी, सौरभ जैन (सिदर्थि), के. पाटन के पूर्व अध्यक्ष बिरधी चंद जी जैन, आदिनाथ दि.जैन मंदिर महावीर नगर द्वितीय कोटा के समस्त कार्यकारिणी सदस्य ,पारस जैन (पार्श्वमणि), चम्बल सिटी संगिनी एवं आदिश महिला मंडल की समस्त सदस्यों सहित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने गोद भराई की रस्म भाव पूर्ण की। सभी की अल्पाहार की व्यवस्था की गई।विदित हो कि 35 वर्षो से जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले पारस जैन पार्श्वमणि को दोनो ब्र.भाईयो ने सिर पर हाथ रखकर प्रसन्नचित मुद्रा में जैन धर्म प्रभावना के लिए मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। **-पारस जैन पार्श्वमणि**

कलेक्टर एवं सीईओ ने "उड़ान" कार्यक्रम के माध्यम से दानी उच्चतर माध्यमिक कन्या शाला में सफल होने के बताए तरीके

बताया हिन्दी माध्यम और शासकीय स्कूल से पढ़कर और गांव का रहने वाला बच्चा कैसे बने आईएएस

रायपुर (विश्व परिवार)। छोटे से गांव का रहने वाला और सरकारी स्कूल में पढ़कर हमने आईएएस बनने का सपना पूरा किया। तो आप कठिन मेहनत, दृढ़ इच्छा शक्ति और लक्ष्य बनाकर नई उंचाईयों में पहुंच सकते है। उन्होंने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि जब बेटियां अच्छी तरह से पढ़कर उच्च पद में पहुंचे और तब महिला सशक्तिकरण तब कारगर सिद्ध होती है। यह उक्त बातें कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने उड़ान कार्यक्रम के माध्यम से कालीबाड़ी स्थित जे.आर. दानी कन्या शाला में छात्राओं से कहीं। उन्होंने कहा कि जब कोई सामान्यत: यह होता है कि कोई बड़ी हस्ती स्कूल आते हैं तो उनके साथ विद्यार्थी ग्रुप उनके ऑटोग्राफ लेते हैं और ग्रुप फोटो खिंचवाते हैं। मुझे सबसे ज्यादा खुशी तभी होगी

जब इस स्कूल की छात्रा उस जगह पहुंचे जिनके साथ सब ग्रुप फोटो खिंचवाये। कलेक्टर डॉ. सिंह ने स्कूली बच्चों से कहा कि जीवन निर्माण में समय का बड़ा महत्व होता है। सही समय में सफलता पाने के लिए सही समय का चयन करना जरूरी है। स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई के दौरान ही लक्ष्य निर्धारित कर दृढ़इच्छा शक्ति से ही मुकाम हासिल किया जा सकता है। कलेक्टर ने कहा कि बचपन में स्कूल की पढ़ाई के दौरान पढ़ने-लिखने का टाइम-टेबल बच्चे बनाते हैं, लेकिन उसका पालन ज्यादा समय तक नहीं करते है। इसलिए एक वक्त के बाद बच्चों को खुद के भविष्य को उज्जवल बनाने के लिए पढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि माता-पिता की अपेक्षाएं होती है कि बच्चे पढ़-लिखकर नाम रोशन करें। जब कोई भी बच्चा नए मुकाम को हासिल करता हैं तो उसके नाम से माता-पिता का नाम भी बनता है। इसलिए लक्ष्य निर्धारित कर लिए हैं तो किसी भी परिस्थिति में राह से भटकने की जरूरत नहीं हैं।

कलेक्टर डॉ. सिंह ने कहा कि कई बार ऐसा होता है कि बच्चे गलतियां भी कर जाते हैं, लेकिन जब आप सफल हो जाते हैं तो हर कोई उन गलतियों को भी भूल जाता है। उन्होंने कहा कि सीखने की चाह पैदा होनी चाहिए। जब बच्चे कोई भी खेल खेलते हैं तो उस समय बहुत आनंद आता हैं। उसी तरह पढ़ाई को भी खेल की तरह समझकर आनंद लेते हुए पढ़िए।

उड़ान कार्यक्रम में जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप ने अपने स्कूल के दिनों की पढ़ाई को याद करते हुए पुराने अनुभव साझा किए।

जनदर्शन में कलेक्टर दीपक सोनी ने सुनी आम लोगों की समस्याएं और शिकायतें, अधिकारियों को दिये निराकरण करने के निर्देश

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिला कार्यालय में आयोजित हुए कलेक्टर जनदर्शन में कलेक्टर श्री दीपक सोनी ने आम लोगों की समस्याओं, शिकायतों को गंभीरता से सुनकर अधिकारियों को निराकरण करने हेतु निर्देशित किया। जन दर्शन में आज अलग-अलग समस्याओं के निराकरण हेतु कुल 31 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर ने प्रकरणों के अनुसार संबंधित अधिकारियों को आवेदन प्रेषित करते हुए यथा शीघ्र नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही उन्होंने महत्वपूर्ण प्रकरणों को समय सीमा में दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही संबंधित अधिकारियों को प्रेषित किया। इस दौरान अपर कलेक्टर दीप्ति गौते, सीईओ जिला पंचायत सुश्री दिव्या अग्रवाल सहित समस्त विभागों के जिला अधिकारी गण उपस्थित रहे।

साप्ताहिक जनदर्शन में आज लवन नगर निवासी खगेंद्र जायसवाल ने मुद्रा लोन के तहत वर्ष 2020 में मुर्गी पालन हेतु 5 लाख 50 हजार का ऋृण लिया गया था.जिसका भुगतान किश्त के रूप में प्रतिमाह 10 हजार के हिसाब से 5 साल तक जमा करना होता था.आवेदक द्वारा कार्य प्रारंभ होने से नियमित रूप से 10 हजार रूपये प्रतिमाह जमा करते हुए फरवरी 2024 तक 6 लाख रूपये जमा कराया गया है। उसके बावजूद एसबीआई बैंक प्रबंधक शाखा लवन के द्वारा मुर्गी फार्म को सील कर दिया गया। जिससे आवेदन को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

विधायक देवेन्द्र यादव के परिवार से मिले पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल

मां से मिलकर जाना हालाचाल, कहा- सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं

लगातार सतनामी समाज के निर्दोष युवाओं के रिहाई की मांग कर रहे थे देवेंद्र यादव

भिलाई (विश्व परिवार)। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी आज भिलाई नगर के विधायक देवेंद्र यादव के निवास पहुंचे। जहां वे? विधायक देवेंद्र यादव की मां से मिले। करीब 1 घंटे तक मां के पास बैठक उनका हालाचाल जाना। उनके स्वास्थ्य की खैरियत ली। परिवार के सदस्यों से चर्चा की और सभी को हिम्मत दिया। सभी से कहा कि आप सभी लोग अपना ख्याल रखिए। मां से कहा कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे। समय पर भोजन और दवाइएं ले। परिजनों और विधायक देवेंद्र यादव के बड़े भाई धर्मेद्र यादव से भी कहा कि वे माता जी का ख्याल रहे। देवेंद्र का ख्याल रखने के लिए वे सब है। पूर्व सीएम श्री बघेल जी ने आगे पूरे परिवार को विश्वास जताते हुए कहा कि उनके रहते हुए उन्हें किसी भी तरह की चिंता करने की जरूरत नहीं है। पूरा कांग्रेस परिवार, प्रदेश की पूरी जनता युवा नेता देवेंद्र यादव के साथ है। पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि युवा नेता विधायक छत्तीसगढ़ महतारी का साहसी बेटा है। जो भोलेभाले, मासूम, निर्दोष प्रदेशवासियों के ?हक की लड़ाई लड़ रहा है। इसलिए भाजपा की सरकार उससे बदला लेने के लिए यह सब प्रपंच कर रही है। लेकिन सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजीत नहीं हो सकता है। एक दिन विधायक देवेंद्र यादव की जीत और पूरे शान से वह बहुत जल्द जेल से बाहर आएगा।

भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव 17 अगस्त से जेल में है। बलौदाबाजार मामले में पुलिस ने उन्हें पूछताछ के लिए नोटिस दिया था। इसके बाद विधायक देवेंद्र यादव एक बार थाने जाकर पुलिस के पूछताछ में सहयोग किया। पूरी सवालों का जवाब दिया था। इसके बाद भी पुलिस नोटिस देकर पूछताछ के नाम पर उनके घर आई और बल पूर्वक धोखे से उन्हें उठाकर ले गई और लेजाकर जेल में बंद कर दी है।

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल

राजधानी परियोजना संभाग, नवा रायपुर अटल नगर

प्रथम निविदा आमंत्रण सूचना

विज्ञापन क्रमांक-61

छ.ग. गृह निर्माण मण्डल राजधानी परियोजना संभाग-नवा रायपुर अटल नगर में समग्र शिक्षा (माध्यमिक) अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, चंदखुरी, विकासखण्ड आरंग, रायपुर में 02 नग अतिरिक्त कक्ष, 01 नग प्रयोगशाला, कला एवं संस्कृति कक्ष एवं 01 लायब्रेरी का शेष निर्माण कार्य हेतु एकीकृत पंजीयन प्रणाली में पंजीकृत निविदाकार/ठेकेदारो से ऑफलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। विस्तृत निविदा आमंत्रण सूचना मण्डल वेबसाईट **http://cghb.gov.in** में उपलब्ध है तथा अन्य जानकारी हेतु कार्यपालन अभियंता, राजधानी परियोजना संभाग, नवा रायपुर अटल नगर के फोन नं. 9425238891 पर संपर्क करें।

कार्यपालन अभियंता

SAMVAD- 41322/ 3

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./14243/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 03-09-2024

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 14243
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **16** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107L489BB** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VASUDEV PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KHIMJI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MANISHA MANOHAR ADITYA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANOHAR DAMODHARDAS ADITYA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./14242/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 03-09-2024

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 14242
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **16** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107L489BA** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VASUDEV PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KHIMJI PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VIJAY LAXMI AGARWAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PRADEEP AGARWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 416 दिनांक 04.09.2024
वार्ड का नाम- मो. अब्दुल रउफ वार्ड
वार्ड क्र. 28 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **28** मांग **पंजी क्र. 796 युआईडी 33664** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **कमल किशोर अग्रवाल/ राम अवतार अग्रवाल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सुमन राजोरिया / अशोक कुमार राजोरिया** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **04-10-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 417 दिनांक 04.09.2024
वार्ड का नाम- भारत माता वार्ड
वार्ड क्र. 30 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **30** मांग **पंजी क्र. 254 युआईडी 26984** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **नीलू सिन्हा / सुबोध सिन्हा** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **कीर्तन कुमार देवांगन/ शिवनारायण देवांगन** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **04-10-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 418 दिनांक 04.09.2024
वार्ड का नाम- सुन्दर लाल शर्मा वार्ड
वार्ड क्र. 20 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **20** मांग **पंजी क्र. 585 युआईडी 22476** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **आलोक कुमार अग्रवाल/ स्व. ब्रिजमोहन अग्रवाल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **सोमवीर सिंह / सुमेर सिंह** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **04-10-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 419 दिनांक 04.09.2024
वार्ड का नाम- मां शितला वार्ड
वार्ड क्र. 16 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **16** मांग **पंजी क्र. 216 युआईडी 19587** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **सुरेश वर्मा/विजय वर्मा** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **संगीता यादव / अजय कुमार यादव** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **04-10-2024** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 03 रायपुर
मामले की श्रेणी : राजस्व
संदर्भ : जिला रायपुर तहसील-रायपुर प.ह.न.- 00061 मठपुरैना ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक - RD 202324440722500551

ईश्तहार

तहसील रायपुर के प.ह.न. 00061 के अंतर्गत ग्राम मठपुरैना के वर्तमान भूमिस्वामी **रामचंद्र चौरसिया पिता पिता/पति-काशी प्रसाद चौरसिया** पता-सा.देह P-465589 के द्वारा धारित भूमि खसरा क्रमांक 174/2 (0.0134) में प्रस्तावित भूमिस्वामी/क्रेता **श्रीमती कमला देवी पिता/पति-श्री शिव कुमार देवांगन पता-म.नं. 86, खैरा रोड वार्ड नंबर 02 कटगी बलौदाबाजार** के नाम पर पंजीयन/फौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती / खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई दिनांक 23/09/2024 को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 03 रायपुर पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो इश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता / आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते है। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 31/08/2024 को जारी किया जाता है।

अतिरिक्त तहसीलदार :
Prakash Soni
रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राज. परि., नवा रायपुर प्रथम एवं पंचम तल व्यवसायिक परिसर (दक्षिण पूर्व कार्नर) सेक्टर-27 नवा रायपुर, अटल नगर
फोन नं.-0771-4016094
E-mail id:- em_zone2@yahoo.com

// आम-सूचना //

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि धरमपुरा रायपुर में प्रकोष्ठ **भवन क्रमांक ब्लॉक नं.-44/05 प्रथम तल, को श्री ओंकारेश्वर प्रसाद चौबे पिता श्री नंदकिशोर चौबे,** के नाम स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा पुर्ण राशि जमा कर रजिस्ट्री एवं आधिपत्य की कार्यवाही पुर्ण कर लिया गया है। वर्तमान में **श्री ओंकारेश्वर प्रसाद चौबे पिता श्री नंदकिशोर चौबे, निवासी : कृष्णा नगर, पानी टंकी के पास, डंगनिया रायपुर, जिला- रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त भवन को क्रेता **श्री शिव कुमार गौर पिता श्री हाजरा समारू गौर एवं श्रीमति देवकी गौर पति श्री शिव कुमार गौर, निवासी: द ग्रैण्ड नीलम होटल, होटल बेबीलोन के आगे, व्ही.आई.पी. रोड, रायपुर (छ.ग.) को विक्रय** करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी) प्रदाय करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

धरमपुरा रायपुर में प्रकोष्ठ भवन **क्रमांक ब्लॉक नं.-44/05 प्रथम तल**, के विक्रय के सबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक, अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अद्योहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र राजधानी परियोजना
नवा रायपुर, अटल नगर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनान्तर्गत, शंकर नगर, रायपुर में स्थित **भवन क्रमांक- एल.आई.जी.-47, सेक्टर-02, श्री ए. के. राहटगांवकर पिता स्व. बी.आर. राहटगांवकर** को इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्र. 1645 दि. 25.01.1982 के माध्यम से आबंटित किया गया है। उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 25.02.1994 को सेलडीड पंजीकृत करा लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री ए.के. राहटगांवकर पिता स्व. बी.आर. राहटगांवकर, निवासी-एल.आई.जी.-47, सेक्टर-02, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा तथा पूर्व में आबंटी एवं **(1) श्रीमती चंद्रा नचरानी पति श्री रमेश कुमार नचरानी (2) श्रीमती मुस्कान नचरानी पति श्री संजय कुमार नचरानी** के मध्य विक्रय इकरारनामा दिनांक 21.03.2024 के निरस्तीकरण संबंधी दस्तावेज प्रस्तुत कर उक्त भवन को **क्रेता श्री सुनील कुमार नचरानी पिता श्री रमेश कुमार नचरानी, निवासी एल.आई.जी.-51, सेक्टर-02, शंकर नगर, रायपुर** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /14195/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 03-09-2024

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 14195
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **69** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568B00616** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NARENDRA KUMAR ADIL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. SAJHURAM** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. MAMTA RAJA BALPANDE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAJA DILIP BALPANDE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /14281/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 04-09-2024

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 14281
वार्ड का नाम- 02 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **02** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802G00258** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ANIL KUMAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMBAIAK SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUSHILA PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAKESH ATEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /14274/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 04-09-2024

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 14274
वार्ड का नाम- 69 - माधवराव सप्रे वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड **69** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR568C0201C** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAM NARAYAN MISHRA AND SUNS HUF** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. SHANKAR MISHRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **CHHAVI DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LAKSHMAN DEWANGAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./14250/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 03-09-2024

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 14250
वार्ड का नाम- 36-हवलदार अब्दूल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **36** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR436G00094** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAMJAAN ALI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O MEDHE ALI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री फिरोज अली** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता- श्री रामज़ान अली** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./14251/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 03-09-2024

इशितहार

नामांतरण प्र.क्र. 14251
वार्ड का नाम- 36-हवलदार अब्दूल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **36** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR436K00008** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SANTA BAI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O LAKHAN YADAV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती नईमा बानो** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति - श्री शाहदत हुसैन** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर गुरूवार 05 सितंबर 2024

आश्रम छात्रावासों का रोस्टर अनुसार निरीक्षण करें अधिकारी बच्चों के स्वास्थ्य की जरूर लें जानकारी-कलेक्टर कार्तिकेया गोयल

डेंगू प्रभावित वार्डों में नगर निगम और स्वास्थ्य विभाग लगातार जारी रखे सोर्स रिडक्शन अभियान

कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल ने ली साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक

रायगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर कार्तिकेया गोयल ने आज समय-सीमा की बैठक में जिला अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि आश्रम छात्रावासों की नियमित जांच करें। वहां बच्चों से चर्चा कर पढ़ाई-लिखाई खाने के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य के बारे में जरूर जानकारी लें। उन्होंने सहायक आयुक्त आदिवासी विकास विभाग को खास तौर पर निर्देश देते हुए कहा कि बारिश का मौसम आश्रम छात्रावासों में अधीक्षकों को बच्चों के स्वास्थ्य के लिए विशेष रूप से सजग रहने के लिए कहा जाए। बच्चों की रूटीन हेल्थ चेकअप के साथ ही बीमार पडऩे की स्थिति में तत्काल डॉक्टरों से इलाज करवाएं इसमें कहीं पर भी कोताही नहीं होनी चाहिए। कलेक्टर श्री गोयल ने इसके साथ डेंगू को लेकर भी शहर के ज्यादा प्रभावित वार्डों में साफ-सफाई, डोर टू डोर सर्वे और सोर्स रिडक्शन का काम लगातार जारी रखने के लिए कहा। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग की टीम को भी नियमित रूप से सर्वे के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने ई केवाईसी किए जाने के बारे में जानकारी ली। खाद्य अधिकारी ने बताया कि कैंप लगाकर माध्यम से ई-केवाईसी अपडेशन किया जाएगा। उन्होंने नगरीय क्षेत्रों में विशेष रूप से ई-केवाईसी अपडेशन का काम करने के निर्देश दिए। वहीं बारदाना खरीदी के संबंध में भी उन्होंने जानकारी ली और सभी एसडीएम को पीडीएस बारदाना जमा किए जाने में तेजी लाने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल पीएम जनमन योजना अंतर्गत जिले में निवासरत विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर के शत-प्रतिशत आबादी को शासन की सभी योजनाओं से जोड़ते हुए आधार अपडेशन और आयुष्मान कार्ड निर्माण जैसे कार्य अनिवार्य रूप से जल्द पूरा करने के लिए कहा। कलेक्टर श्री गोयल ने स्वास्थ्य विभाग के भवनों के निर्माण की समीक्षा की। उन्होंने भवन निर्माण के कार्यों में देरी को लेकर काम कर रही एजेंसी सीजीएमएसी पर गहरी नाराजगी जताई। उन्होंने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि निर्माण कार्यों की अपने स्तर पर नियमित समीक्षा करें। जहां समस्या आ रही है उसे टीएल बैठक में बताएं। कलेक्टर श्री गोयल ने पोषण सप्ताह के अंतर्गत पूरे जिले में शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप कार्यक्रम चलाने के निर्देश महिला बाल विकास विभाग को दिए। कलेक्टर श्री गोयल किसानों के केसीसी निर्माण की प्रगति के बारे में भी जानकारी ली। उन्होंने मछली और उद्यान विभाग के अधिकारियों से कहा कि किसानों की कुल संख्या के आधार पर केसीसी कार्ड जारी करने के लिए लक्ष्य का निर्धारण करें।

संक्षिप्त समाचार

तालाब में डूबने से युवक की मौत

खैरागढ़(विश्व परिवार)। खैरागढ़ के कोडेनवागांव में उस समय सनसनी फैल गई जब यहां स्थित तालाब में डूबने से एक युवक की मौत हो गई. घटना के बाद कई घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद गोताखोरों की टीम ने देर रात शव को तालाब से बाहर निकाला. जिला मुख्यालय से लगे ग्राम कोड़ेनवागांव में 35 वर्षीय युवक की तलाब में नहाने के दौरान डूबने से मौत हो गई है. जानकारी के अनुसार कोड़ेनवागांव निवासी कृष्णा नेताम पोला पर्व के दिन सोमवार को दोपहर तकरीबन 3.30 बजे गांव के दैहान पारा स्थित तालाब में नहाने गया हुआ था. जहां अचानक तालाब में डूबने से उसकी मौत हो गई. ग्रामीणों ने बताया कि तकरीबन 7 एकड़ के रकबे में फैला गांव का यह तालाब बहुत गहरा है और दुर्घटना से बचने तालाब में पचरी का भी निर्माण कराया गया है. लेकिन तालाब की गहराई में जाने के कारण युवक पानी में डूब गया और उसकी मौत हो गई. युवक के तालाब में डूबने की सूचना मिलने पर शाम करीब सात बजे गोताखोरों की टीम तालाब पर पहुंची और कई घंटों की मशक्कत के बाद युवक का शव तालाब से बाहर निकाला गया.

इंजीनियर के खाली पदों को भरने मुख्यमंत्री से की मांग

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल अभियंता संघ के प्रतिनिधि मंडल ने प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से मुलाकात की है। भविष्य की बिजली की मांग को पूरा करने अभी से नए बिजली संयंत्रों व स्टोरेज परियोजनाओं के स्थापना की जरूरत बताई। संघ ने बिजली कंपनी में इंजीनियर व तकनीकी कर्मियों के खाली पदों को भरने की ओर ध्यान आकृष्ट कराया है। इसके लिए भर्ती प्रक्रिया आयोजित करने मांग की है। संघ के अध्यक्ष इंजीनियर राजेश पांडेय ने बताया कि साल 2004 के बाद से बिजली कंपनी में सेवा दे रहे कर्मचारियों को पुरानी पेंशन योजना की बहाली की मांग की है। इसके अलावा योग्य अधिकारी-कर्मचारी को पदोन्नति का लाभ देने और अन्य राज्यों की बिजली कंपनियों की तरह छत्तीसगढ़ की बिजली कंपनी में भी चतुर्थ उच्चतर वेतनमान का प्रावधान लागू करने की मांग को भी ज्ञापन में शामिल किया है।

कलेक्टर ने हरी झंडी दिखाकर उल्लास रथ को किया रवाना

रायगढ़(विश्व परिवार),। कलेक्टर कार्तिकेया गोयल ने उल्लास कार्यक्रम के अंतर्गत उल्लास रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिसके माध्यम से जन-जन साक्षरता का प्रचार-प्रसार होगा। ज्ञात हो कि जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण के अंतर्गत जिले में शिक्षा से वंचित 15 वर्ष एवं अधिक आयु वर्ग के लोगों के लिए उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम कलेक्टर एवं अध्यक्ष के कुशल मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक जारी है। छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार जिले में उल्लास साक्षरता सप्ताह का आयोजन 1 से 8 सितंबर तक किया जा रहा है। जिसके लिये अलग-अलग दिवसों में अलग अलग कार्यक्रम निर्धारित है। निर्धारित कार्यक्रम अनुसार प्रत्येक दिवस की गतिविधियां शैक्षणिक संस्थानों में की जा रही है। जिसका उद्देश्य उल्लास कार्यक्रम के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाना एवं शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना है। इसी कड़ी में 3 सितम्बर को उल्लास नवभारत साक्षरता के पांच महत्वपूर्ण घटकों एवं कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्रदर्शित करते हुए उल्लास रथ को कलेक्ट्रेट परिसर से कलेक्टर एवं अध्यक्ष, जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान प्राधिकरण के सचिव जिला शिक्षा अधिकारी डॉक्टर के.व्ही.राव, जिला मिशन समन्वयक नरेंद्र कुमार चौधरी, जिला साक्षरता मिशन के जिला परियोजना अधिकारी देवेंद्र कुमार वर्मा एवं अन्य विभागीय कर्मचारी उपस्थित रहे।

पर्यावरण संरक्षण और सर्प बचाव प्रशिक्षण पर बाइक रैली आयोजित

कोरबा(विश्व परिवार)। यूथ हॉस्टल एसोसिएशन की बिलासपुर और कोरबा यूनिट ने संयुक्त रूप से 1 सितंबर 2024 को पर्यावरण संरक्षण और सर्प बचाव प्रशिक्षण पर बाइक रैली का आयोजन किया। चेयरमैन संदीप सेठ ने सुबह 8 बजे घंटाघर से रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस कार्यक्रम में लगभग 50 प्रतिभागी शामिल हुए। प्रतिभागियों ने 170 किमी की दूरी तय करते हुए कोरबा, कॉफी पॉइंट, देवपहरी, सतरेंगा, बांगो, कटघोरा का भ्रमण किया और वापस कोरबा लौटे। स्नेक रेस्क्यू ट्रेनर अविनाश यादव ने सदस्यों को सर्पदंश से निपटने का प्रशिक्षण दिया तथा सर्पों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। यूथ हॉस्टल ने सतरेंगा में जागृति समुह की महिलाओं से परंपरागत भोजन प्राप्त कर उनके आर्थिक सशक्तिकरण में भूमिका निभाई। कार्यक्रम का समापन प्रमाण पत्र वितरण के साथ हुआ।

खतरनाक लोनर हाथी चेपारानी पहुंच, मचा हड़कंप

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के रलिया व खैरभवना में तीन महिलाओं को एक दिन में मौत की नींद सुलाने वाला खतरनाक लोनर हाथी काफी दिनों तक जांजगीर व बिलासपुर जिले के जंगलों में विचरण करने के बाद फिर कोरबा जिले में पहुंच गया है। वर्तमान में यह लोनर कटघोरा वनमंडल अंतर्गत पाली रेंज के चेपारानी जंगल में विचरण कर रहा है। लोनर के क्षेत्र में पहुंचने से हडकंप मच गया है। जानकारी मिलते ही वन विभाग सतर्क हो गया है और उसका अमला मौके पर पहुंचकर लोनर की निगरानी में जुट गया है। पाली रेंजर संजय लकड़ा ने बताया कि रात 10.30 बजे यह हाथी चेपारानी के जंगल में अमन ढाबा के पीछे खेत में दिखा जो अभी भी वहां पर मौजूद है। उसके करतला, रंगोले व तेंदूभाठा गांव की ओर बढने की संभावना है। ग्रामीणों को अलर्ट कर दिया गया है। पाली के साथ-साथ बिलासपुर वनमंडल की टीम भी लोनर की निगरानी के लिए मुस्तैद है जो लगातार नजर बनाए हुए है। अगर पाली से लगे जंगली इलाकों को पार कर हाथी बिलासपुर की सीमा में प्रवेश करता है तो उसे वहां से भी खदेड़ा जाएगा। लोनर ने चेपारानी जंगल में पहुंचने से पहले रास्ते में चेपा गांव में कई ग्रामीणों के फसल को रौंद दिया है। हाथी के इस उत्पात से नुकसानी का आंकलन उसे खदेडने के बाद किया जाएगा। बताया जा रहा है कि पिछले महीने कटघोरा वन मंडल के ग्राम रलिया और ग्राम खैरभावना में आतंक मचाकर तीन महिलाओं,मवेशी को मौत के घाट उतारने वाला दंतैल हाथी तीन जिलों की सरहद के भीतर घूम रहा है। कोरबा से निकलकर जांजगीर-चांपा जिले के पंतोरा से लगे छाता जंगल में विचरण करता हाथी बिलासपुर जिले के सीपत और आसपास के क्षेत्र के जंगल में पहुंच गया। अब इस इलाके से लगे जंगल के भीतर से होते हुए पाली क्षेत्र के मुनगाडीह के बाद चेपारानी जंगल में पहुंच गया है।

आबादी क्षेत्रों में शराब दुकान होने से बढ़ी जनता की परेशानी

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले में विभिन्न आबादी क्षेत्रों में संचालित हो रहे शराब दुकान के कारण आम लोगों की परेशानी बढ़ी हुई है। खासकर महिलाओं और युवतियों के लिए आबादी क्षेत्र की यह शराब दुकानें अपमान का कारण भी बन रहे हैं। कई इलाकों में मुख्य मार्ग पर शराब दुकान होने के कारण महिलाओं और युवतियों का गुजरना भी मुश्किल होने लगता है क्योंकि शराबियों के द्वारा की जाने वाली छींटाकशी और उनके जमघट लगने से तथा कई बार तो शराब दुकान के सामने ही या आसपास में जाम छलकाने से असुरक्षा का भाव उत्पन्न हो जाता है। इसी कड़ी में नगर पालिक निगम क्षेत्र अंतर्गत शारदा विहार, मुड़ापार, रामनगर, अमरैया पारा जैसे आबादी इलाके से लगे क्षेत्र में संचालित शराब दुकानों को लेकर प्रशासन से शिकायत की गई है कि शराब दुकानों को यहां से हटाकर गैर आबादी क्षेत्र में आबादी क्षेत्र से बाहर संचालित किया जाय। इस संबंध में क्षेत्र की महिलाओं व शांति पसन्द लोगों ने छत्तीसगढिया क्रांति सेना और जोहार छत्तीसगढ़ पार्टी के पदाधिकारियों से भी आग्रह किया है कि वह इस मामले में आवश्यक पहल करें। बताया गया कि विधायक और मंत्री लखन लाल देवांगन सहित कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक के पास फरियाद लेकर जा चुके हैं, आज तक आश्वासन के अलावा कुछ हासिल नहीं हुआ तब जोहार छत्तीसगढ़ पार्टी के कोरबा शहर अध्यक्ष हरि चैहान, दीपका जेसीपी अध्यक्ष लाला साहू, राकेश यादव से क्षेत्र की महिलाओं ने अपनी बात रखी और इन्होंने सहयोग करने का आश्वासन बैठक में दिया है।

प्रवासी पक्षियों का दुश्मन बने बिज्जुओं को पकडने की कवायद जारी

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के कनकीधाम गांव में प्रवासी पक्षियों एशियन बिल ओपन स्टार्क के जान की दुश्मन बने कबर बिज्जुओं को पकडने के कवायद में वन विभाग की टीम लगातार जुटी हुई है। लेकिन इसमें उसे सफलता नहीं मिल पा रही है। क्षेत्र में मौजूद बिज्जुओं को पकडने के लिए विभाग जाल बिछा रखा है लेकिन इसमें वे फंस नहीं रहे हैं और प्रवासी पक्षियों के बच्चों को लगातार नुकसान पहुंचा रहे हैं। बीती रात क्षेत्र में सक्रिय बिज्जुओं ने प्रवासी पक्षियों के चार बच्चों को फिर घोंसले से नीचे गिरा दिया था लेकिन उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। पेड़ से नीचे गिरे एशियन बिल ओपन स्टार्क के बच्चों को फिर से वापस घोंसले में डाल दिया गया है। इससे पहले कबर बिज्जुओं ने पिछले 4-5 दिनों से सक्रियता दिखाते हुए पेड़ों पर चढकर प्रवासी प्रक्षियों के बच्चों को काटने के साथ उन्हें मार भी देते थे। कबर बिज्जुओं की इस करस्तानी से चार दर्जन से अधिक प्रवासी पक्षियों के बच्चों की जान चली गई थी। ग्रामीणों द्वारा इसकी जानकारी दिए जाने पर वन अमला उसकी सुरक्षा के लिए सक्रिय हुआ और निगरानी करने के साथ ही कबर बिज्जुओं को पकडने के लिए कवायद शुरू किया है।

लैंको को टेकओवर करेगा अडानी ग्रुप, बनेगा छत्तीसगढ़ का दूसरा सबसे बड़ा पावर प्लांट

कोरबा(विश्व परिवार)। लैंको पावर प्लांट को जल्द ही अडानी ग्रुप टेकओवर करेगा. एनसीएलटी के आदेश के बाद से 4100 करोड़ रुपए में डील फाइनल हुई है. हालांकि इस पूरी प्रक्रिया में 2 महीने का समय लगेगा. लैंको अमरकंटक की क्षमता फिलहाल 600 मेगावाट है.लंबे समय से लैंको अमरकंटक पावर प्लांट वित्तीय संकट से जूझ रहा है. इसके कारण ही 660म2 मेगावाट की दो इकाइयां निर्माणाधीन अवस्था में हैं. जिनका 60 से 70 फीसदी काम पूरा हो चुका है. अडानी समूह द्वारा अधिग्रहण किए जाने के बाद अधूरे इकाइयों के भी जल्द पूरा होने की उम्मीद है. यदि ऐसा हुआ तो लैंको छत्तीसगढ़ का दूसरा सबसे बड़ा पावर प्लांट बनेगा. इससे देश और प्रदेश को अतिरिक्त बिजली मिलेगी. साथ ही साथ रोजगार के भी नए अवसर पैदा होंगे. बैंक लोन के एनपीए होने से पहले सितंबर 2019 में एनसीएलटी में वाद दायर किया गया था. इसमें लैंको प्रबंधन ने कर्ज चुकाने से हाथ खड़े कर दिए थे. इस पर एनसीएलटी ने लैंको को दिवालिया घोषित कर दिया था. इस तरह से अडानी ने एनसीएलटी के जरिए बोली लगाकर पावर प्लांट का अधिग्रहण कर लिया है. इसे खरीदने रिलायंस पावर ने भी प्रयास किया था. तकनीकी स्टाफ को छोड़ मेनेजमेंट स्तर के सभी काम अब अडानी समूह द्वारा टेकओवर किया जाएगा. इसके साथ ही अडानी, एनटीपीसी के बाद छत्तीसगढ़ में दूसरा सबसे बड़ा बिजली उत्पादक समूह बनेगा. इसके साथ ही अडानी की छत्तीसगढ़ में यह तीसरी बिजनेस प्रापर्टी होगी. इससे पहले अडानी समूह ने तिल्दा स्थित जीएमआर पावर प्लांट का टेकओवर किया था. वर्तमान में लैंको अमरकंटक पावर प्लांट से 300म2 मेगावाट की दो इकाइयां संचालित हैं. लेकिन इन्हें फुल लोड पर नहीं चलाया जाता. मांग के अनुसार ही सीमित क्षमता पर उत्पादन किया जाता है. वर्तमान में लैंको में 600 मेगावाट की क्षमता से जितनी भी बिजली का उत्पादन होता है. यह मध्य प्रदेश और हरियाणा को भेजा जाता है.

बालको कर्मचारियों ने किसानों के साथ मिलकर किया एसआरआई विधि से धान की रोपाई

कोरबा(विश्व परिवार)। वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) ने अपने 'मोर जल मोर माटी' परियोजना के तहत लेट्स डू रोपई कार्यक्रम आयोजित किया। रोपाई में भाग लेकर कर्मचारियों ने समुदाय के साथ हरेली उत्सव मनाया। किसानों को सिस्टम फॉर राइस इंटेंसिफिक्रेशन (एसआरआई) पर प्रशिक्षण देकर रोपाई विधि को आसान बनाया। 50 से अधिक कर्मचारी स्वयंसेवकों ने 4.5 एकड़ खेत में धान लगाने में योगदान दिया। इस अभियान से लाभान्वित किसान के श्रम लागत में लगभग 15 प्रतिशत की कमी आई। छत्तीसगढ़ में हरेली त्यौहार कृषि चक्र की शुरुआत का प्रतीक है। हरेली उत्सव किसानों के लिए महत्वपूर्ण त्यौहार है। छत्तीसगढ़ को 'धान का कटोरा' कहा जाता है। इस वर्ष बालको ने अपने कर्मचारियों को किसानों के साथ मिलकर धान की रोपाई में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। किसानों के साथ मिलकर कार्य करने से एकजुटता की भावना को बढ़ावा मिला। बालको के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक राजेश कुमार ने कहा कि बालको किसानों का हरसंभव सहयोग करने के लिए कटिबद्ध है। 'लेट्स डू रोपाई' अभियान में हमारे कर्मचारियों का स्वैच्छिक सेवा, समुदाय के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। मोर जोल मोर माटी परियोजना के माध्यम से कंपनी समुदाय के किसानों को सिस्टमेटिक राइस इंटेंसीफिक्रेशन (एसआरआई) विधि के साथ विभिन्न तकनीक और आधुनिक कृषि पद्धतियों में प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। आवश्यक ज्ञान और संसाधनों के साथ हमारा लक्ष्य किसानों के जीवन में बदलाव लाना है जिसमें कृषि और स्थायी आजीविका के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और बुनियादी ढांचे के विकास भी शामिल है।

यातायात पुलिस ने बच्चों को दी यातायात नियमों की जानकारी

कवर्धा(विश्व परिवार),। पुलिस अधीक्षक डॉ. अभिषेक पल्लव के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री विकास कुमार, श्री पुष्पेन्द्र बघेल के मार्गदर्शन में यातायात प्रभारी रक्षित निरीक्षक श्री प्रवीण खलखो एवं यातायात टीम द्वारा स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल कवर्धा में यातायात जागरूकता अभियान चलाया गया। इस दौरान पुलिस मुख्यालय रायपुर द्वारा प्राप्त यातायात जागरूकता पाम्पलेट को स्कूल में चस्पा किया गया। यातायात प्रभारी श्री खलखों द्वारा विद्यार्थियों को बिना हेलमेट, बिना सीट बेल्ट, ओव्हर स्पीड, शराब सेवन कर वाहन चलाना, ओव्हर लोडिंग, वाहन चलाते समय मोबाईल का उपयोग, दुपहिया वाहन में तीन सवारी बिठाकर वाहन चलाने के दौरान होने वाली सड़क दुर्घटनाओं के संबंध में लोगों को बताया गया। यातायात प्रभारी श्री प्रवीण खलखों छात्रों को बताया कि सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों की दर देश में सबसे ज़्यादा है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि हेलमेट का इस्तेमाल ज़रूर करें, दोपहिया वाहन पर तीन लोग नहीं बैठना चाहिए, 18 साल से कम उम्र के बच्चे वाहन नही चलाना चाहिए। चार पहिया वाहन बिना सीट बेल्ट के न चलाएं, नंबर प्लेट को सामान्य तरीके से लिखवाएं, ताकि सभी लोग इसे पढ़ सकें। उन्होंने ट्रैफ़िक सिग्नल, जेब्रा क्रॉसिंग, और वाहन चलाते समय ध्यान रखने वाले दूसरे नियमों के बारे में भी बताया।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर गुरूवार 05 सितंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

हिंसा का पुराना इतिहास

बलूचिस्तान पाकिस्तान का पुराना नासूर है। इलाकाई लिहाज से यह पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत है, जबकि आबादी के लिहाज से सबसे छोटा प्रांत है। खनिज पदार्थों एवं प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध इस प्रांत के बाशिंदों की अनेक शिकायतें रही हैं। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में हिंसा का पुराना इतिहास है, लेकिन विद्रोही गुटों ने जिस बड़े पैमाने पर सोमवार को हमले किए, वह अभूतपूर्व है। बागियों ने कम-से-कम तीन ठिकानों पर बड़ा धावा बोला। 14 सुरक्षाकर्मियों समेत दर्जनों लोगों के मारे जाने की खबर है। सुरक्षा बलों ने अपनी जवाबी कार्रवाई में 21 उग्रवादियों को मार गिराया। इन घटनाओं के साथ बलूचिस्तान मसले पर फिर से दुनिया का ध्यान गया है। बलूचिस्तान पाकिस्तान का बहुत पुराना नासूर है। इलाकाई लिहाज से यह पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत है, जबकि आबादी के लिहाज से सबसे छोटा प्रांत है। खनिज पदार्थों एवं प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध इस प्रांत के बाशिंदों की अनेक शिकायतें रही हैं। इनकी जड़ें 1947 में भारत के बंटवारे के समय ही पड़ गई थीं। यह इतिहास के पन्नों में दर्ज है कि मुस्लिम बहुल बलूचिस्तान का उदारवादी जनमत मजहबी एजेंडे को लेकर बन रहे पाकिस्तान के साथ जाने को तैयार नहीं था। मगर भौगोलिक निरंतरता और मजहबी पहचान का तर्क देते हुए वहां के लोगों को इस्लामी पाकिस्तान में जाने के लिए मजबूर किया गया। चूंकि पाकिस्तान में कभी लोकतंत्र जड़ें नहीं जमा सका, इसलिए असंतुष्ट समुदायों की भावनाओं का ख्याल करते हुए उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा से जोडने के प्रयास भी नहीं हुए। सोच हमेशा ताकत से फैसला करने की रही। हालिया दौर में बलूचिस्तान को चीन की इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं का प्रमुख स्थल बनाने से भी स्थानीय आबादी में नाराजगी फैली है। यह आम शिकायत है कि इन परियोजनाओं के तहत स्थानीय संसाधनों का दोहन हो रहा है। इस वजह से स्थानीय पर्यावरण भी बिगड़ा है। मगर इन परियोजनाओं से वहां के लोग लाभान्वित नहीं हुए हैं। इसीलिए अक्सर चीनी परियोजना से जुड़े ठिकाने और तैनात चीनी नागरिक भी हमलों का शिकार बने हैं। चूंकि पाकिस्तान की राज्य-व्यवस्था ने संवाद और भरोसे का माहौल बना कर बलूच आवाम को संतुष्ट करने का कोई सार्थक प्रयास नहीं किया है, इसलिए विद्रोह की भावना वहां लगातार मौजूद रही है। पहले इसका विस्फोट इक्का-दुक्का स्तरों पर होता रहा। सोमवार को समन्वित ढंग से विद्रोहियों ने बड़े हमले किए। पाकिस्तान सरकार को इनसे उचित सबक लेना चाहिए।

चीन से घटाना होगा व्यापार घाटा...

डा. जयंतीलाल भंडारी

इस बात को भी समझना होगा कि चीन से व्यापारिक असंतुलन की गंभीर चुनौती के लिए सिर्फ सरकार ही जिम्मेदार नहीं है। चीन के साथ व्यापार असंतुलन के लिए सीधे तौर पर देश का उद्योग-कारोबार और देश की कंपनियां भी जिम्मेदार हैं, जिनके द्वारा कलपुर्जे सहित संसाधनों के विभिन्न स्रोत और मध्यस्थ विकसित करने में अपनी प्रभावी भूमिका नहीं निभाई गई है। साथ ही देश की बड़ी कंपनियों को शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढना होगा हाल ही में थिंक टैंक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई)के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक इस वर्ष 2024 के पहले छह महीनों यानी जनवरी से जून 2024 के दौरान भारत का चीन के साथ अब तक का सर्वाधिक व्यापार घाटा दर्ज किया गया है, जिसका आकार 41.6 अरब डॉलर है। इस अवधि में चीन से आयात बढक़र 50.1 अरब डॉलर हो गया। जबकि चीन को सिर्फ8.5 अरब डॉलर का निर्यात किया गया। यदि हम पिछले संपूर्ण वित्त वर्ष 2023-24 में चीन के साथ भारत के व्यापार को देखें तो पाते हैं कि चीन से आयात 101.75 अरब डॉलर हुआ था। जबकि चीन को निर्यात 16.66 अरब डॉलर रहा तथा चीन के साथ व्यापार घाटा 85.09 अरब डॉलर रहा है। निश्चित रूप से चीन के साथ बढ़ता हुआ व्यापार घाटा देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। ऐसे में उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल के मुताबिक प्रोत्साहन आधारित उत्पादन (पीएलआई) के तहत एपीआई का उत्पादन बढ़ाकर इसके चीन से बढ़े पैमाने पर होने वाले आयात में कमी की जा रही है। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान के मुताबिक चीन को खाद्य प्रसंस्करण उत्पादों का निर्यात बढ़ाने के रणनीतिक प्रयास किए जा रहे हैं। गौरतलब है कि इन दिनों भारत-चीन के व्यापार से संबंधित प्रकाशित हो रही विभिन्न वैश्विक आर्थिक व वित्तीय संगठनों की रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि इस समय भारत के पास चीन से आयात घटाने और वैश्विक निर्यात में भारत का हिस्सा बढ़ाए जाने की संभावनाएं हैं। इन संभावनाओं को साकार किए जाने के चार प्रमुख आधार हैं। एक, चीन से निकलते बड़े उद्योगों, बड़ी कंपनियों और निवेश के भारत की मुट्ठियों में आने की सबसे अधिक संभावनाएं हैं। इससे भारत का मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर मजबूत होगा। दो, चीन प्लस वन रणनीति के तहत भारत दुनिया के सक्षम व भरोसेमंद देश के रूप में निर्यात बढ़ा सकता है। साथ ही अमरीका सहित यूरोपीय व कई विकसित देश चीन से आयात घटाने के लिए चीनी उत्पादों पर जिस तरह असाधारण आयात प्रतिबंध लगा रहे हैं, उससे इन देशों में भारत के उत्पादों का निर्यात बढने की नई संभावनाएं हैं। तीन, देश से चीन को कृषि पदार्थों और खाद्य प्रसंस्करण निर्यात में तेज वृद्धि की जा सकती है। चार, वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण के द्वारा पेश किए गए वित्त वर्ष 2024-25 के बजट में किए गए प्रावधानों से भारत के आयात घटने व निर्यात बढने की संभावनाएं हैं। उल्लेखनीय है कि वैश्विक वित्तीय कंपनी नोमूरा ने हाल ही में अपनी रिपोर्ट में कहा कि चीन से ग्लोबल कंपनियां बाहर निकल रही हैं जिसका बड़ा फायदा भारत को मिलता दिख रहा है। नोमूरा के द्वारा चाईना प्लस वन स्ट्रेटजी पॉलिसी को लेकर 130 फर्मों के साथ सर्वे किया गया है। कहा गया है कि खासतौर से भारत के दरवाजे पर दस्तक दे रही इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, कैपिटल गुड्स, सेमीकंडक्टर (एसेंबलिंग, टेस्टिंग), एनर्जी (सोलर) के अलावा फार्मास्युटिकल्स सेक्टर की कंपनियों का भारत में हर संभव सुविधा देकर स्वागत किया जाना होगा। यह भी महत्त्वपूर्ण है कि जी-20 की नई शक्ति से सुसज्जित भारत नए वैश्विक आपूर्तिकर्ता देश की भूमिका में उभरकर सामने आया है और चीन को आर्थिक टक्कर देने की स्थिति में है। ऐसे में भारत अधिक रणनीतिक प्रयासों से भारतीय बाजार में उद्योग-कारोबार, निर्यात और निवेश के अधिक मौकों को मुट्ठियों में ले सकता है। निश्चित रूप से दुनिया के बाजार में चीन का दबदबा तोडने के परिप्रेक्ष्य में यूरोपीय, अमरीका और अन्य कई देश चीन से आयात के बढ़ते खतरों के मद्देनजर चीनी आयातों पर असाधारण आयात प्रतिबंध लगाते हुए दिखाई दे रहे हैं। विगत 12 जून को यूरोपीय आयोग ने चीन में बने इलेक्ट्रिक वाहनों पर 48 फीसदी तक आयात शुल्क लगाना सुनिश्चित किया है। पिछले कई वर्षों से यूरोपीय देशों की चीन से आयात पर शुल्क की दरें 10 फीसदी तक ही सीमित रही हैं। ऐसे में विभिन्न देशों के द्वारा चीन से आयात होने वाले अनेक उत्पादों पर लगातार बढ़ता शुल्क चीन के आयातों को हतोत्साहित करने की एक अहम पहल है, ऐसे में इन देशों में भारत से निर्यातों की संभावनाएं बड़ी है। इसमें कोई दो मत नहीं है कि चीन को कृषि निर्यात बढ़ाए जाने की प्रचुर संभावनाएं है, देश से कृषि उत्पाद बढ़ाने के साथ कृषि निर्यात बढ़ाने की रणनीतिक पहल की जा रही है। वित्तमंत्री सीतारमण के द्वारा पेश किया गया वर्ष 2024-25 का बजट भी उद्योगों को समृद्ध करने का बजट है। इस बजट के माध्यम से मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को मजबूत करते हुए आयात घटाने व निर्यात बढ़ाने के अभूतपूर्व प्रावधान किए गए हैं। इससे चीन का भारतीय बाजारों पर जो दबदबा बना हुआ है, उसमें भी कमी आते हुए दिखाई दे सकती है। यह बात महत्त्वपूर्ण है कि मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर देश से निर्यात और रोजगार सृजन दोनों में अहम योगदान देता है और इसके प्रोत्साहन के लिए इस बजट में खास ख्याल रखा गया है। वित्तमंत्री ने बजट में देश के 100 शहरों में प्लग एंड प्ले वाले औद्योगिक पार्क बनाने की घोषणा की है। केंद्र, राज्य और निजी सेक्टर की आपसी सहभागिता से प्लग एंड प्ले सुविधा वाले औद्योगिक पार्क विकसित किए जाएंगे। उद्यमी को ऐसे औद्योगिक पार्क में जाकर सिर्फ उत्पादन शुरू करना होता है। नए बजट के प्रावधानों के तहत 100 शहरों में प्लग एंड प्ले वाले सुविधा वाले औद्योगिक क्लस्टर या पार्क के विकसित होने से कम से कम 100 प्रकार के आइटम का बड़े पैमाने पर उत्पादन हो सकता है। वर्ष 2024-25 के बजट में वित्तमंत्री ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों (एमएसएमई) को निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर सशक्त बनाया है। साथ ही इस सेक्टर के आयात में कमी के मद्देनजर प्रावधान किए गए है। निस्संदेह अब एक बार फिर से देश के करोड़ों लोगों को चीनी उत्पादों की जगह स्वदेशी उत्पादों के उपयोग के नए संकल्प के साथ आगे बढना होगा। इस बात को भी समझना होगा कि चीन से व्यापारिक असंतुलन की गंभीर चुनौती के लिए सिर्फ सरकार ही जिम्मेदार नहीं है। चीन के साथ व्यापार असंतुलन के लिए सीधे तौर पर देश का उद्योग-कारोबार और देश की कंपनियां भी जिम्मेदार हैं, जिनके द्वारा कलपुर्जे सहित संसाधनों के विभिन्न स्रोत और मध्यस्थ विकसित करने में अपनी प्रभावी भूमिका नहीं निभाई गई है। साथ ही देश की बड़ी कंपनियों को शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढना होगा। इस बात पर भी गंभीरतापूर्वक ध्यान देना होगा कि जिस तरह हाल ही में यूरोपीय यूनियन और अन्य विकसित देशों के द्वारा चीन से आयात नियंत्रित करने के लिए गैर टैरिफ अवरोध के साथ अन्य आयात प्रतिबंधों को असाधारण रूप से बढ़ाया गया है। उसी तरह भारत के द्वारा संरक्षणवाद के तरीके अपनाते हुए चीन से तेजी से बढ़ रहे आयात और चीन के साथ बढ़ते हुए व्यापार घाटे को नियंत्रित करने के लिए रणनीतिक रूप से आगे बढना होगा।

आलेख

राज्यों के विधानसभा चुनाव

अजय दीक्षित

पिछले दिनों चुनाव आयोग ने हरियाणा और जम्मू कश्मीर में चुनाव की तारीखों की घोषणा कर दी है, परन्तु उसने झारखण्ड और महाराष्ट्र के चुनावों की तारीखें नहीं बतलाई । पिछली बार हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव एक साथ हुये थे । चुनाव आयोग पर आरोप है कि वह केन्द्र की सरकार के दबाव में काम करता है । महाराष्ट्र में भाजपा की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है । अजित पवार फैन्स (दीवार के किनारे) बैठे हैं । वे शरद पवार के निकट भी बने रहना चाहते हैं । यूं अभी वे शिंदे की सरकार में उप मुख्यमंत्री हैं । अगली बार भाजपा अपना मुख्यमंत्री बनायेगी । यह बात शिंदे गुट के शिवसेना को पसंद नहीं होगी । राज ठाकरे भी अपनी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के साथ चुनाव में उतरना चाहता है । झारखण्ड में भाजपा की स्थिति कुछ बेहतर है । चम्बई को भाजपा अपने में मिलाना चाहती थी पर चम्बई सोरेन ने अपनी अलग पार्टी बनाने की घोषणा कर दी । उत्तरप्रदेश की 10 सीटों पर होने वाले उपचुनाव की तारीखें भी घोषित नहीं हुई है जबकि राज्य की विधानसभा का कार्यकाल कुछ ज्यादा नहीं बचा है ।

जम्मू कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस व कांग्रेस का गठजोड़ हो रहा है । इस बार केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह कांग्रेस से दस सवाल पूछ रहे हैं कि क्या वह 370 और 35ए को बहाल करेंगे । क्या पाकिस्तान के प्रति उनका क्या रुख है? क्या वह कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा दिये जाने के पक्ष में हैं, आदि आदि ।

परन्तु विपक्ष उनसे पूछ रहा है कि उमर अब्दुल्ला वाजपेयी जी के काल में विदेश मंत्री थे । विदेश मंत्री को भारत की अखण्डता का नक्शा दुनिया के सामने रखना पड़ता है । स्मृति ईरानी और शाह कांग्रेस से सवाल पूछ रहे हैं तो इण्डिया गठबन्धन भी भाजपा से सवाल पूछ रहा है कि पी.डी.पी. के साथ भाजपा ने कश्मीर में सरकार कैसे बनाई थी । मेहबूबा मुफ्ती की पी.डी.पी. ने भी अपने घोषणा पत्र में पुनः कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा दिलाया जायेगा । असल में भाजपा से भी कुछ असुविधाजनक सवाल पूछे जा रहे हैं । मेहबूबा के मुख्यमंत्री काल में भाजपा उप मुख्यमंत्री रहीं है । असल में अभी भी कश्मीर में सब कुछ ठीक नहीं है । हर दिन पाकिस्तान से आतंकवादी घुसपैठ करते हैं । बहुत से सेना के अधिकारी और सोल्जर शहीद हो चुके हैं ।

मोहन भागवत ने पिछले दिनों कहा था कि विपक्ष को अपना विरोधी न मानकर उसे प्रतिपक्ष कहना चाहिए । उन्होंने यह भी कहा था कि काम तो करो पर यह अभिमान मत पालो कि मैंने किया था । इधर लग रहा है कि भाजपा को कई मामलों में अपने पैर खींचने पड़ रहे हैं । लैटरल इंट्री वाला विज्ञापन वापिस लेना पड़ा । कई विधेयकों को वापस लेना पड़ता है या होल्ड पर डाल दिया जाता है । मुस्लिम बिल को पार्लियामेंट कमेटी को भेजना पड़ा है । कश्मीर के मसले पर यदि भाजपा कांग्रेस को घेरती है तो विपक्ष भाजपा और पी.डी.पी. के साथ उसके सम्बन्धों को उजागर करेगी । यूं तो सभी टी.वी. चैनल प्रो सरकार हैं यानि प्रो भाजपा । पहले एन.डी.टी.वी. पर रवीश कुमार का प्रोग्राम आता था । अब एन.डी.टी.वी. अडानी ग्रुप के पास है, अतः रातोंरात रवीश कुमार की छुट्टी कर दी गई । लोग कहते हैं कि अमित शाह ने मुफ्ती मेहबूबा को फूलों का गुलदस्ता भेंट किया था । यूं प्रधानमंत्री और गृहमंत्री अमित शाह किसी को फूलों का गुलदस्ता भेंट नहीं करते । वे तो प्राप्त करते हैं ।

असल में वर्तमान की घटना भविष्य में क्या रूप लेगी यह किसी को नहीं मालूम । कहते हैं कि भविष्य पुराण में भविष्य का सभी कुछ वर्णित है । पर यह शायद राजनीति पर लागू नहीं होता । चुनाव में जीत हार का असर देश में जो तरक्की हो रही है, उसे पर नहीं पड़ना चाहिए । इसके लिए सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों को कुछ कदम बढ़ाकर पास-पास आना होगा । यही भारत का भविष्य है ।

इस धरा पर जन्म लिए हर मनुष्य शिक्षक हैं

सुश्री सरोज कंसारी

जीवन की किताब में हर पग में एक नए अध्याय प्रारंभ होते हैं।

इस धरा पर जन्म लिए हर मनुष्य शिक्षक हैं, जिनसे हम सीखते हैं।

एक शिक्षक का कार्य सिर्फकिताबी ज्ञान देना नहीं, उसे व्यवहारिक जीवन के लिए तैयार करना भी हैं।

कोरे मन में ज्ञान का सागर भरने का काम एक शिक्षक करते हैं।

सद्व्यवहार से श्रेष्ठ मानव को गढ़ते
अबोध मन मे ज्ञान का सार हैं भरते
गुरु दिव्य प्रकाशपुंजअंधियारा हरते
मजधारों से पार जीवन नैया करते।।

जीवन की किताब में हर पग पर नये अध्याय प्रारंभ होते हैं।सवालों की अंनत बौछार से अंतर्मन भी भींग जाता हैं ।हर पल नई चुनौतियों का सामना होता हैं, जिसका कोई पाठ्यक्रम नहीं होता। पर संघर्ष के पथ पर चलकर ठोकरों व मुसीबतो से सब आसान होने लगता हैं।समस्याओं के बीज में ही समाधान का फसल लहलहानें लगते हैं।अनुभव बंजर मन को भी उपजाऊ बना देती हैं। सबसे शक्तिशाली समय हैं जो हमें पल टुपल प्रेरित करती हैं टुचेहरें की वेदना को पढ़ने,दर्द को सहने,जख्मों को छुपाने, रिश्तो को निभाने और अपनी गति में धुन में आगे बढ़ने के लिए, ईश्वर के आगे नतमस्तक होने और सद्कार्य करने के लिए। जन्म से लेकर मृत्यु तक हम सृष्टि के हर कण से हर पल सीखते हैं।जन्म होते ही बच्चा का परिचय माँ से होता हैं जो बिल्कुल अबोध हैं। फिर भी माँ की ममता स्पर्श प्रेम दुलार और स्नेह को पहचानने में वह समर्थ होता हैं ।इसलिए कहते हैं माँ ही सबसे प्रथम गुरु होती हैं। बालक माँ की गोद से उठकर परिवार के अन्य सदस्यों के सानिध्य में आता हैं ।दादा-दादी बुआ चाचा-चाची,भाई-बहन को पहचानने लगता हैं।जहाँ वह हँसना- रोना, उठना-बैठना,उँगली पकड़कर चलना सीखता हैं । इसलिए परिवार ही उसका प्रथम पाठशाला होता है। कोरे मन में ज्ञान का सागर भरने का काम एक शिक्षक करते हैं। जहाँ से इस दुनिया से धीरे ढुधीरे परिचय का सिलसिला प्रारंभ होता हैं। शिक्षक अज्ञान के अंधकार में एक उम्मीद की जुगनू बन चमकता हैं, जिसके सानिध्य में शिष्य का विद्यारंभ संस्कार प्रारंभ होता हैं। शिक्षक का अर्थ होता हैं-अपने आचरण से पथ प्रदर्शन करना ,जीवन में आगे बढ़ने के लिए रास्ता बताना,मंजिल तक पहुँचने में मदद करना, एक बालक को परिवार समाज व राष्ट्र के हित में कार्य करने के लिए तैयार करना।शिक्षक का कार्य सिर्फ पाठ्य पुस्तक को पढ़ाकर उसे पास कराना नही होता। एक शिक्षक का महत्वपूर्ण उद्देश्य होता हैं-बालक का चारित्रिक विकास करना, संस्कार देकर उसे देशभक्त, सेवाभावी ,आज्ञाकारी और सद्व्यवहारी बनाना होता हैं। जो सिर्फ व्यावसायिक ज्ञान नहीं आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर पूरे संसार को रोशन कर सकें।जो वीर ,साहसी निर्भीक और सहयोगी हो।अगर एक हम ऐसा करने में सफल होते हैं तो शिक्षक बनने की सार्थकता पूर्ण होती हैं। आज आवश्यक हैं दुदूषित मानसिकता से ऊपर उठकर हर बालक आरुणी, एकलव्य, राम कृष्ण, गौतम ,विवेकानन्द बनें ।यह तभी संभव हैं जब आज के शिक्षक भी गुरु द्रोणाचार्य सांदीपनि, रामकृष्ण परमहंस बनकर शिक्षा देने को तैयार हो जाएं। जब राह कठिन हो,मन विचलित हो उम्मीद की किरण दिखाई न दें, ऐसे समय मे शिक्षक ज्ञान की रोशनी से हमे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। हर पग पर हमें उचित-अनुचित का निर्णय देने मे सहयोग करते हैं ।उनकी बात का अनुसरण कर एक योग्य नागरिक बन जिम्मेदारी का निर्वहन करने में सक्षम होते हैं ।बड़े-बड़े महापुरुष भी गुरु के आशीर्वाद व उनके छत्रछाया में महान कार्य को अंजाम दिये हैं। गुरु के प्रति श्रद्धा व समर्पण ही अनजान सफर में सहयोगी बनते हैं। उनकी आज्ञा पालन से ही हर कार्य सफल होते हैं। शिक्षक एक सफल नाविक हैं ,जो हमें जीवन के मजधारों साहिल तक पहुँचानें का कार्य करते हैं।शिष्य के हर कुविचारों को दूर कर सद्भाव भरते हैं ।अपने श्रेष्ठ उद्गारों से उच्च कोटि के गुण विकसित करते हैं। प्राचीन और वर्तमान शिक्षा शिक्षक और शिष्य के संबंध में बहुत ही अंतर आया हैं । जो समय परिस्थिति व माहौल का ही प्रभाव हैं ।आधुनिक जीवन शैली का परिणाम हैं ।पहले शिष्य गुरु के आज्ञाकारी होते थे ,अनेक कष्ट उठाकर शिक्षा ग्रहण करते और सीखने की प्रबल भावना थी ।मुश्किलो से डरते नही थे, व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करते उनका उद्देश्य महान लक्ष्य तक पहुँचना होता था। पूर्ण लगन और मेहनत से पढ़ते थे, कोई सुविधा नही,अभाव में जीवन यापन करते और हकीकत की दुनिया में जीते थे । आज की परिस्थिति अलग हैं, गुरु दुशिष्य परंपरा विलुप्त सी हो गई। पूर्ण सुविधा होने के बावजूद आज बच्चे वर्तमान जीवन शैली ,पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण कर अपनी संस्कृति को भूल रहें है। शिक्षक के प्रति न श्रद्धा हैं न सम्मान ।आज शिक्षा का उद्देश्य पूरी तरह से व्यावसायिक हो गया हैं। पढ-लिखकर नौकरी ही उद्देश्य रह गया हैं।दूषित शिक्षा प्रणाली के लिए सिर्फ बच्चे ही नही कुछ मनमौजी शिक्षक, और अभिभावक और बोझिल पाठ्यक्रम ये सब जिम्मेदार हैं। आज जरूरत हैं सभी को मिलकर विद्यार्थियों को एक सूत्र में बांधकर प्राचीन परंपरा का निर्वहन करते हुए गुरु दुशिष्य के मधुर संबंधों को कायम रखने का, उनमें नैतिक मानसिक और शारिरिक विकास कर सर्वांगीण विकास का। शिक्षक बनकर अपने दायित्व को ईमानदारी से पूर्ण करें ।सिर्फ खाना पूर्ति न करे। नवाचारी के माध्यम से शिक्षा दे और इस पुनीत कार्य में हम सभी सहभागी बनें।

असमंजस में निष्पक्ष न्याय कर लेते
ब्रम्हा,विष्णु और महेश तब कहलाते
धरा की धीर से उच्च शिखर पहुंचाते
हे !गुरुवर हृदय से नमन तुम्हें करते।।

तस्मै श्री गुरूवे नमः-गुरू हमारे परम वंदनीय हैं

शिक्षक पुष्पेंद्र जैन

गुरु गोविंद दोऊ खडे,काकैं लागों पाय।
बलिहारी गुरु आपने,गोविंद दियो बताय।।

तुम जब सफलता की ऊंचाईयों तक पहुंच जाओ तो उस समय अपने कदमों को यथार्थ के धरातल से डिगने मत देना।उक्त विचार डां0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जी के आज भी प्रासंगिक हैं। किसी भी पेशे की तुलना अध्यापन से नहीं की जा सकती। ये दुनिया का सबसे नेक कार्य है। पूरे भारत में शिक्षक दिवस के रुप में इस दिन को मनाने के लिए 5 सितंबर को अध्यापन पेशे को समर्पित किया गया है। शिक्षकों को सम्मान देने और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को याद करने के लिये प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।देश के विकास और समाज में हमारे शिक्षकों के योगदान के साथ ही अध्यापन पेशे की महानता को उल्लेखित करने के लिये हमारे पूर्व राष्ट्रपति के जन्मदिवस को समर्पित किया गया है।वैसे तो समय-समय पर डां0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन इस देश के अनेक महत्वपूर्ण पदों पर आसीन हुए हैं ,लेकिन एक शिक्षक के रूप में उन्होंने जो किया है वह युगों -युगों तक स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।डॉ0सर्वपल्ली राधाकृष्णन एक महान शिक्षक थे।जिन्होंने अपने जीवन के 40 वर्ष अध्यापन पेशे को दिया है।वो विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षकों के योगदान और भूमिका के लिये प्रसिद्ध थे।इसलिये वह पहले व्यक्ति थे।उनके शिष्यों के अनुरोध पर उन्होंने कहा कि मेरा जन्मदिन मनाने की जरूरत नहीं है।मेरे जन्मदिन को यदि मनाना ही है तो शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए तो सर्वश्रेष्ठ रहेगा।उन्होंने शिक्षकों के बारे में सोचा और सन् 1962 से प्रतिवर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रुप में मनाया जाने लगा। डॉश सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुतनी गांव में हुआ था।इनकी माता का नाम सीतम्मा व पिता का नाम सर्वपल्ली वीरास्वामी था।उनकी बेसिक शिक्षा उनके पैतृक गांव में हुई और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत उन्होंने 1909 में चेन्नई के प्रेसिडेंसी कॉलेज में अध्यापन पेशे में प्रवेश करने के द्वारा दर्शनशास्त्र शिक्षक के रुप में अपने कैरियर की शुरुआत की। उन्होंने देश में बनारस,चेन्नई, कोलकाता,मैसूर जैसे कई प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों तथा विदेशों में लंदन के ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालयों में दर्शनशास्त्र को पढ़ाया ।अध्यापन पेशे के प्रति अपने समर्पण की वजह से उन्हें अपने बहुमूल्य सेवा की पहचान के लिये सन् 1949 में विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति कमीशन के अध्यक्ष के रुप में नियुक्त किया गया।सन् 1954 में उन्हें卐भारत रत्न卐की उपाधि से सम्मानित किया गया। वर्ष 1962 से शिक्षक दिवस

के रुप में 5 सितंबर को मनाने की शुरुआत हुई।अपने महान कार्यों से देश की लंबे समय तक सेवा करने के बाद 17 अप्रैल 1975 को इनका निधन हो गया। कहा भी गया है कि शिक्षक- विद्यार्थियो के जीवन के वास्तविक कुम्हार होते हैं जो न सिर्फ हमारे जीवन को आकार देते हैं बल्कि हमें इस काबिल बनाते हैं कि हम पूरी दुनिया में अंधकार होने के बाद भी प्रकाश की तरह जलते रहें। इस वजह से हमारा राष्ट्र ढ़ेर सारे प्रकाश के साथ प्रबुद्ध हो सकता है। इसलिये देश में सभी शिक्षकों को सम्मान दिया जाता है। शिक्षकों के महान कार्यों के बराबर हम उन्हें कुछ भी नहीं लौटा सकते हालाँकि हम उन्हें सम्मान और धन्यावाद दे सकते हैं। हमें पूरे दिल से ये प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम अपने शिक्षकों का सम्मान करेंगे क्योंकि बिना शिक्षक के इस दुनिया में हम सभी अधूरे हैं।गुरु ही सच्चे मार्गदर्शक होते हैं।गुरु की महिमा का वर्णन करने बैठूं तो न जाने कितने दिन व रात लग जायेंगे।गुरू ही हमारे जीवन को आदर्श

बनाते हैं।गुरूओं का उपकार कभी भुलाया नहीं जा सकता है।गुरु ही हैं जो हमारे एक सच्चे मित्र की तरह होते हैं।वह अपने शिष्य की हमेशा प्रगति का मार्ग ही सोचते हैं।वह ऐसा मार्गदर्शन करते हैं कि उनके शिष्य के साथ मेरा भी नाम हो,मुझे भी लोग याद करें।पूर्व राष्ट्रपति डां0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन चरित्र को लोग युगों -युगों तक याद रखेंगे।जो एक सच्चे व प्रिय शिक्षक थे।

गुरू आपकी ये अमृत वाणी।
हमेशा मुझको याद रहे।।
जो अच्छा है जो बुरा है।
उसकी हम पहचान करें।।
मार्ग मिले चाहे जैसा भी।
उसका हम सम्मान करें।।
द्वीप जले या अंगारे हो।
पाठ तुम्हारा याद रहे।।
अच्छाई और बुराई का ।
जब भी हम चुनाव करें।।
गुरू आपकी ये अमृत वाणी।
हमेशा मुझको याद रहे।।

विशेष पुण्यशाली हैं समडोली का समाज, जहाँ पर शांतिसागर महाराज जी को आचार्य पद मिला : आचार्य श्री अनेकांत सागर जी महाराज

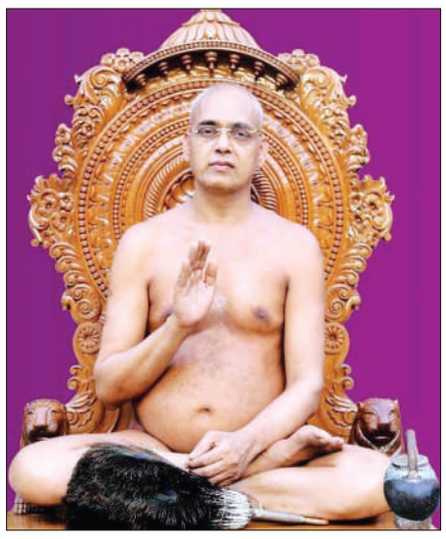

नांदणी (विश्व परिवार)। बहुत बड़ा सागर है, समुद्र है। यदि उसको पार होना हो तो छोटी सी नौका के द्वारा पार होना बहुत मुश्किल है। ऐसे जो ज्ञान ध्यान चारित्र्य की मूर्ति थे। जो त्याग और तपस्या के हिमालय थे।जो चारित्र्य और चर्या के एक सुमेरु थे। जिन्होंने चेतन और अचेतन तीर्थों का जीर्णोद्धार किया। जिन्होंने अपने जीवन में मुलाचार को बहोत बार पढ़ा। और मुल आराधना, जो भगवती आराधना जिसे अपने जीवन में 36 बार पढ़ा और उन्होंने उसको अपने जीवन में आचरण करके चरितार्थ कर दिया था। जो अपने इन्द्रिय और मन के विजेता थे। जो इस पंचम काल में आर्ष परम्परा, आगम चक्खू साधु, जो एक महापुरुष थे, जो सिद्ध पुरुष थे और जो श्रमण संस्कृति में प्रसिद्ध पुरुष थे। ऐसे महान विभूति, महान आत्मा जो वर्तमान के श्रमण संस्कृति के श्रावकों के लिए नहीं, श्रावकों के अभी भी जो आन, बान और शान थे।

ऐसे चारित्र्य चक्रवर्ती आचार्य भगवान यथानाम तथा गुण से विभूषित आचार्य भगवंत शांतिसागर जी महाराज जिनके इन चरमचक्षुयों ने दर्शन नहीं किये, परन्तु आचार्य श्री ने जहाँ जहाँ चातुर्मास किए, उन स्थानों का मुझे सानिध्य और समागम अवश्य मिला। ये मेरा पुण्योदय है। मैं ये मानता हूँ, परमात्मा की भक्ति और गुरु का ही प्रसाद है, की ऐसी पावन भूमियों पर समागम मुझे भी मिला।

आचार्य शांतिसागर महाराज जी के उपकार कितने है। इस भारत की श्रमण संस्कृति और श्रावकों के लिए उपहार कितने है, इसकी व्याख्या शब्दातीर्थ है। यह श्रद्धानगम्य है।

पुना वर्षायोग के पश्चात जब मैंने नीरा की ओर विहार किया। जहाँ पर आचार्य महाराज ने पंचकल्याणक करवाया था और वहाँ पर थे। उसके बाद लोणंद गया। जहाँ पर आचार्य श्री ने अपना चातुर्मास किया था और जीस खेत में रहते थे, वहीं पर हमारा संघ गया और हम लोग वहीं पर जाके रुके। फलटण एक ऐसा गांव है जहाँ पर आचार्य शांतिसागर जी का वर्चस्व है। भारत में फलटण का जैन समाज विशेष पुण्यशाली है। आचार्य महाराज ने वहाँ एक नहीं दो नहीं, तीन चातुर्मास अपने जीवन में कहीं एक स्थान पर की है। तो वह फलटन स्थान पर की है। और आचार्य श्री शांतिसागर महाराज जी का हीरक जयंती महोत्सव जो मनाया गया था। वो फलटण में ही मनाया गया था।

आचार्यश्री ने आगम तीर्थ का भी जीर्णोद्धार किया। उन्होंने धवला जयधला और महाधवला, जो हमारे आगम के प्रमाण है। अभी जैन धर्म की धरोहर है। जो जैन धर्म की संपत्ति है उसे उन्होंने ताम्रपत्र में लिखवा करके वो फलटण में भी रखा और उसके कुछ पार्ट्स बॉम्बे में भी है। कुछ उसके पार्ट्स सोलापुर में भी है। ऐसा उन्होंने जिनवाणी रुपी तीर्थ का भी जीर्णोद्धार किया। उन्होंने अचेतन तीर्थ जो हमारे मंदिर है जहां पर जैन धर्म एक स्वतंत्र धर्म है। जैन धर्म की त्याग और तपस्या में जो जैन धर्म की एक विशेषता है।

फलटण का आदिनाथ मंदिर है वहाँ पर मुझे उस मंदिर में रहने का सौभाग्य मिला। वहाँ पर महाराज जी की पिंछी, कमंडल और उनका सिंहासन भी है। और मेरा वहाँ पर चर्तुथ आचार्य पदारोहण मनाया गया था।

ये तो आचार्य शांतिसागर महाराज जी की ही भक्ति है। और गुरुओं की ही कृपा है की कभी वहाँ से मंदिर के बाहर कभी भी वो शास्त्र नहीं निकला। कभी भी पिंच्छी, कमंडल और उनका सिंहासन नहीं निकला। पर हमारे लिए उन लोगों ने उस कार्यक्रम में आचार्य श्री जी सिंहासन पर बैठते थे वही सिंहासन पर ही हमारा आचार्य पदारोहण का कार्यक्रम किया। और मुझे पिंच्छी आचार्य शांति सागर जी की ही दी गई और आचार्य महाराज जी का ही कमंडल मुझे दिया गया। जय धवला और महाधवला को दिया।

-अभिषेक अशोक पाटील

मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में कहा

संत जनों का राग हमें भव सागर से पार उतारता है

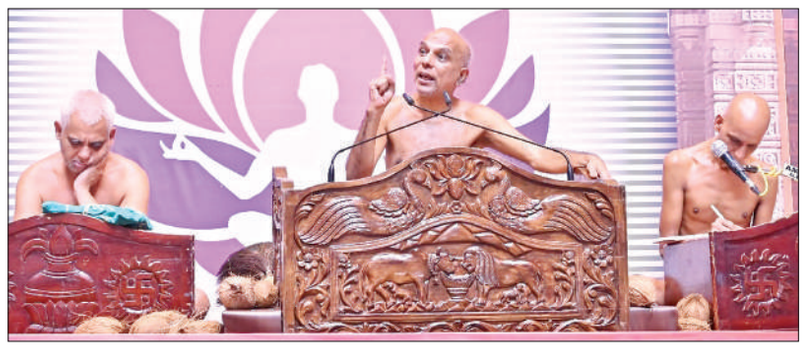

इंदौर (विश्व परिवार)। गुरु के उपदेश को जब रुचि पूर्वक मार्गदर्शन के रुप में सुनते हो, तो वह बात आपके सीधे हृदय में उतरती है, आचार्य गुरूदेव कहते है कि संत जनों का राग हमें भव सागर से पार उतारता है। उपरोक्त पक्तियाँ संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव विद्यासागरजी महा मुनिराज के परम साधक शिष्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने सोलहकारण वृत के श्रुत भक्ति तथा प्रवचन भक्ति पर मोहताभवन में प्रात:कालीन सभा में व्यक्त किये। मुनि श्री ने कहा भक्ती की महिमा अदभुत है। आचार्य सोमदेव सूरी कहते है कि जो भगवान की बाणी को प्रीति चित्त और उमंग से भरकर सुनता है वह व्यक्ती निश्चित रुप से भावी विद्वान बनता है, मुनि श्री ने कहा कि अन्तस में तत्व के प्रति प्रीती तुम्हारी पहचान बन सकती है।उदाहरण देते हुये कहा कि आप लोग जब अपनी गाड़ी चलाते हो तो रोड़ पर लगे सिग्नल तथा संकेतों और साईनबोर्ड को देखकर उसका पूरी तरह से पालन करते हो उसमें तो कोई कसर नहीं करते? जी महाराज पालन इसलिये करते है कि यदि इसका पालन नहीं करेंगे तो दुर्घटना हो जाऐगी उसी प्रकार जिनवाणी माता आप सभी के लिये दिशा पट्टिका के रुप में कार्य करती है कि तुम कंहाँ जा रहे हो? तम्हें कंहा जाना है? कितना चल चुके हो? कितना और चलना है? आगे का रास्ता कैसा है? तुम्हें कंहा मुड़नाहै? कहां रुकना है? तथा कंहा रास्ता बदलना है? यह सब आपको जिनवाणी बता रही है कि मोक्षमार्ग पर आपको कैसे आगे बड़ना है, मुनि श्री ने कहा कि एकबार रास्ते पर चलना भूल जाओगे तो एक जीवन की ही क्षति होगी, लेकिन मोक्षमार्ग में यदिभृष्ट हो गये तो यह भव भव तक आपको रूलाऐगा, अत: ऐसे भवउद्धारक मार्ग और उसका अनुसरण को कभी नहीं छोडना है। भगवान ने जो कुछ कहा है उसे भक्तीभाव से समझना तथा उसका बहुमान बनाये रखना चाहिए।मुनि श्री ने जिनवाणी में भी मिलाबट की चर्चा करते हुये कहा कि जो लोग त्याग तपस्या तथा चरित्र को महत्व नहीं देते ऐसे लोग जिनवाणी से छेड़छाड़ करके मूलसंघ के द्वारा स्थापित सिद्धांतों को ही बदल देते है ऐसे लोगों के न तो ग्रंथ पूज्यनीय है और न ही उनके द्वारा बनाये जिनमंदिर तथा जिन प्रतिमा पूज्यनीय है, जो मूल संघ की परंपरा है, उसी परंपरा को मानना चाहिये तथाधर्म को व्यापक रूप से समझना चाहिये, इसमें किसी भी प्रकार का पंथवाद या विवाद नहीं करके जंहा पर जो परंपरा जैसी चल रही है उस परंपरा के अनुसार चलना चाहिये। धर्मप्रभावना समिति के प्रवक्ता अविनाश जैन तथा मीडिया प्रभारी राहुल जैन(स्पोर्ट्स) ने बताया 5 सितंवर गुरुवार को आचार्य शांतिसागर जी महाराज का समाधि दिवस एवं शिक्षक दिवस मनाया जाऐगा एवं विशेष कार्यक्रम 5:45 से 7:20 तक होगा जिसमें वर्तमान शिक्षा की प्रशांगिकता पर उद्बोधन एवं शंकासमाधान का कार्यक्रम होगा। जिसमें विश्वविद्यालयों के कुलपति, निर्देशक, रजिस्टार, और अन्य बड़े बड़े प्राध्यापक, प्राचार्य गण शामिल होंगे।एवं प्रात:काल समवसरण मंदिर में आयोजित 6:45 से अभिषेक तथा शांतीधारा मुनिसंघ के सानिध्य में आयोजित होगी आज बुद्धवार को उदासीन आश्रम में भगवान महावीर की चमत्कारी प्रतिमा का अभिषेक एवं शांतीधारा संपन्न हुई, अधिष्ठाता बाल ब्र.अनिल भैया, अशोक भैया, अभय भैया, विमल भैया मुकेश भैया सहित आश्रम में रहने बाले सभी ब्रहम्चारीओं ने शांतीधारा में भाग लिया।तत्पश्चात मोहताभवन में शांतीधारा समय पर संपन्न हुई एवं प्रवचन हुये। **-अविनाश जैन**

आत्म अनुष्ठान में रत साधु छोटे बड़े पशु पक्षी स्त्री पुरुष गरीब अमीर में कोई भेद नहीं करते : आचार्य कनकनंदी जी

पारडा ईटीवार (विश्व परिवार)। सिद्धांत चक्रवर्ती वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनदी गुरुदेव ने पारडा ईटीवार से अंतरराष्ट्रीय वेबीनार में बताया कि योगी हमेशा आत्म अनुष्ठान में सलग्न में रहते हैं। आत्मा के ध्यान अध्ययन में रत रहते हैं। आत्म अनुष्ठान में रत साधु छोटे बड़े पशु पक्षी स्त्री पुरुष गरीब अमीर में कोई भेद नहीं करते। आधी व्याधि उपाधि मोक्ष मार्ग में बाधक है। साधु का लक्ष्य कृत कृत्य बनना, अरिहंत सिद्ध बनना है।

महाराज श्री ने कहा मोह व प्रसिद्ध की चाह में साधु स्वयं की गरिमा को स्वयं ही नष्ट कर देते हैं। नाम चाहना प्रसिद्ध चाहना मिथ्या दृष्टि जीव का काम है। साधु स्वयं को श्रद्धा प्रज्ञा से सिद्ध स्वरूप मानता है चाहे णमोकार मंत्र भी ना आ रहा हो।

आचार्य श्री कहते हैं कि जिस करनी से बने अरिहंत सिद्ध महान। उस करनी को हम करें हम तुम सिद्ध समान। जितने परमेष्ठी सिद्ध बने हैं उसका भी अनंतवा भाग भावी सिद्ध नरक में निगोद में है पापी है मिथ्या दृष्टि है। भविष्य कालीन सिद्धो को नमस्कार करना अत: भावी जो सिद्ध होने वाले हैं अभी किसी भी पर्याय में हो उनके भावी गुणो को नमस्कार किया जाता है। सोहम का अर्थ जो परमात्मा है वह मैं हूं साधु स्वयं को सोहंम मानते है। इसलिए किसी में भेदभाव नहीं करते हैं। प्राचीन शास्त्र श्रीभुवलय में भी कहा गया है कि सब धर्मो के भगवान को नमन है जो आठो कर्मों से रहित है। जब भक्त भगवान के पास जाता है तो दास बनकर जाता है दासोहं दासोहं रटता रटता भगवान के दर्शन से नष्ट हो जाता है। सोहंम रह जाता है। सोहम का ध्यान करते-करते सकार मिट जाता है। फिर अविनाशी अविकारी अहम रह जाता हैद्य अहम अर्थात मै आत्म तत्व को प्राप्त करना हैद्य जो राग से युक्त जीवो को महत्व देता है वह स्वयं रागी द्वैषी बन जाता है। सत्ता संपत्ति बाहरी भौतिक पदार्थ आत्मा की शक्ति आत्मा का वैभव नहीं है।

महावीराचार्य पुरस्कार 2024 समर्पण समारोह अयोध्या में हुआ सम्पन्न

गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में प्रो. पद्मावथम्मा को मिला पुरस्कार

अयोध्या (विश्व परिवार)। भगवान ऋषभदेव दिगम्बर जैन मंदिर बडी मूर्ति रायगंज अयोध्या शाश्वत तीर्थ पर महावीराचार्य पुरस्कार 2024 का समर्पण समारोह जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी भारतगौरव गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सानिध्य में सम्पन्न किया गया सर्वप्रथम कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती उषा पाटनी के मंगलाचरण के द्वारा हुआ। तत्पश्चात् प्रो. अनुपम जैन-इन्दौर ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इससे पूर्व तीन बार ये पुरस्कार देश के वरिष्ठ विद्वानों को यह पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। डॉ. जैन ने बताया कि जैन गणित के ऊपर जिन विद्वानों ने शोध की है या इस विषय पर कोई विशेष कार्य किया है उनका चयन निर्णायक मण्डल के द्वारा करके यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार डॉ. अनुपम जैन के परिवार के द्वारा ही 51000/- रुपये की राशि प्रशस्ति पत्र व शॉल देकर के किया जाता है।

इस क्रम में ब्र. डॉ. सविता जैन, शीतल तीर्थ रतलाम के द्वारा वक्तव्य दिया गया जिसमें उन्होंने संक्षिप्त रूप में पुरस्कार के संदर्भ में जानकारी प्रदान की, तत्पश्चात् प्रो. पद्मावथम्मा मैसूर को प्रशस्ति पत्र देकर के डॉ. अनुपम जैन, निशा जैन, पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, श्री विजय कुमार जैन, डॉ. जीवन प्रकाश जैन, डॉ. संजीव सर्राफ, आयुष जैन-इन्दौर, अम्बुज जैन-इन्दौर के द्वारा शॉल पहनाकर के श्री दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-जम्बूद्वीप हस्तिनापुर के पदाधिकारियों के द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर के सम्मानित किया गया। प्रशस्ति का वाचन विद्वत् महासंघ के महामंत्री श्री विजय कुमार जी ने किया एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति जी के द्वारा प्रशस्ति देकर प्रो. पद्मवथम्मा को महावीराचार्य पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया। प्रो. पदमवथम्मा ने जैन गणित के क्षेत्र में उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य किया है जिसके लिए उन्हें सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री विजय कुमार जैन जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर ने किया।

इस अवसर पर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जैन गणित के विषय में कहा कि गणित के द्वारा ही भूगोल एवं खगोल की गणना की जाती है। बिना गणित के कोई भी कार्य सम्भव नहीं है आज जैन गणित पर कार्य करने वालों की अत्यन्त आवश्यकता है भगवान ऋषभदेव ने युग की आदि में अपनी पुत्रियों को अंक विद्या सिखा करके इसी भूमि से अंकगणित का प्रतिपादन किया है। आज उसी भूमि पर एक महिला को महावीराचार्य पुरस्कार दिया जा रहा है ये अत्यन्त ही गौरव की बात है उनके लिए हमारा मंगल आशीर्वाद इसी श्रृंखला में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने अपना मंगल आशीर्वाद कार्यक्रम में आए भक्तों के लिए प्रदान किया कार्यक्रम की मुख्य अतिथ प्रो. रेणु जैन कुलपति अहिल्या देवी विश्वविद्यालय ने भी अपने वक्तव्य में जैन गणित के बारे में प्रकाश डालते हुए शीघ्र ही अहिल्या देवी विश्वविद्यालय में गणित के विषय में अनेक कार्य सम्पन्न और उसके लिए सरकार के द्वारा अनेक योजनाएँ लागू हो रही हैं। अयोध्या तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी विद्वानों का आभार प्रदर्शन किया एवं जैन गणित के क्षेत्र में जो भी कार्य हो रहे हैं उन सबकी प्रशंसा की एवं पुरस्कार प्राप्त कर्ता के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की अन्त में सम्पूर्ण कार्यक्रम में पधारे हुए विद्वानों का आभार प्रदर्शित करते हुए श्री अम्बुज जैन-गुरुग्राम (हरियाणा) ने कहा कि दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर एवं डॉ. अनुपम जैन परिवार अलग-अलग नहीं है हस्तिनापुर हमारा परिवार है बचपन से ही हम सबने हस्तिनापुर आने जाने का क्रम बना हुआ है। आज हमारे परिवार को ये गौरव प्राप्त हुआ पुरस्कार का समायोजन करने का ये हमारे लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर हम सभी का आभार ज्ञापित करते है। **-विजय कुमार जैन**

तीर्थंकर नाम कर्म की प्रकृति हमेशा जीवों के हित के लिए होती है : मुनि श्री प्रियदर्शी विजयजी

सिद्धि शिखर मंडपम में हुआ भगवान महावीर का जन्म वांचन

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री संभवनाथ जैन मंदिर विवेकानंद नगर में आत्मोल्लास चातुर्मास 2024 की प्रवचनमाला जारी है। पर्युषण महापर्व के पांचवें दिन मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. ने भगवान महावीर का जन्म वांचन किया। माता त्रिशला के 14 सपनों का उल्लेख किया। इसी के साथ ही सिद्धि शिखर मंडपम में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की भक्ति भावपूर्वक आराधना जारी है।

मुनिश्री ने कहा कि कल्पसूत्र हमारे जीवन के व्यवहार को दर्शाता है कि हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए। कल्पसूत्र एक ऐसा विशिष्ट ग्रंथ है इसको तीन भागों में बांटा गया है कि पहला विचार सूत्र, दूसरा वार्तालाप सूत्र और तीसरा व्यवहार सूत्र। मुनिश्री ने कहा कि शुभ प्रकृति पुण्य की है जो सारी की सारी उदय में किसी भी व्यक्ति के आ सकती है। पुण्य की शुभ प्रकृति उदय के अंदर में हो तो उदय में आई हुई शुभ प्रकृति का उपयोग जीव किस तरह से करता है यह डिपेंड करता है कि जीव किस स्थान पर है। मुनिश्री ने कहा कि आज किसी को कंठ अच्छा मिला है तो किसी को अभिनय करने की शक्ति अच्छी मिली है लेकिन सदुयोग छोड़कर वह उसका उपयोग पाप बांधने में कर रहे हैं। आज ऐसे राग से भरे गीत सुनने के बाद में जीवन के अंदर राग की वृद्धि होती है। इस तरह से शुभ प्रकृति के अंदर जीव पाप कर्म भी बांध सकता है। परंतु जिन नाम कर्म, तीर्थंकर नाम कर्म एक ऐसी नाम कर्म की प्रकृति है जो हमेशा एकांत से हमेशा जीवों के हित के लिए ही होती है। जीवों का हित ही करती है। ऐसे शुभ प्रकृति के स्वामी तीर्थंकर परमात्मा होते हैं। मुनिश्री ने भगवान के जन्म वांचन में आगे अप्रकट परमात्मा का अप्रकट प्रभाव समझाया उन्होंने बताया कि परमात्मा अभी प्रकट नहीं हुए हैं माता के गर्भ के अंदर है लेकिन इससे पहले देवलोक में होते हैं। परमात्मा का जीव जब देवलोक छोड़ता है तो भी मन के अंदर एक आनंद की अनुभूति होती है। परमात्मा का जीव माता के गर्भ में आता है तो उसके बाद परमात्मा का प्रभाव होता है कि माता के पेट में वृद्धि नहीं होती। ये तीर्थंकर के आने का प्रभाव है और सारे के सारे राज्य में समृद्धि बढ़ जाती है। ऐसे ही मुनिश्री ने प्रकट परमात्मा का प्रकट प्रभाव समझाया प्रकट परमात्मा तीर्थंकर के रूप में स्थापित हो जाते हैं। कैवल्यज्ञान के बाद समोशरण के अंदर देशना देते हैं, जो शरीर के अंदर रक्त और मांस होता है जो प्रकट रूप में सामने दिखता नहीं है वह श्वेत वर्ण का होता है।

सवंत्सरी व अनन्त चतुर्दशी पर मांस विक्रय केंद्र व बूचड़खाने बंद करने की मांग का दिया ज्ञापन

भाजपा नेता रविन्द्र जैन जुरहरा ने मंत्री झाबरमल खर्रा से मुलाकात कर रखी मांग

कामां (विश्व परिवार)। जैन धर्म के अनुसार भाद्र मास में पर्युषण पर्व को अति पवित्र माना जाता है इस दौरान जैन धर्मावलंबियों द्वारा विशेष पूजा आराधना, व्रत, उपवास, संयम साधना व धार्मिक आयोजन किये जाते हैं।तब मूक पशुओं का वध कर उनके मांस का विक्रय करने से जैन समाज की निर्मल भावनाएं आहत रहती हैं।

जैन समाज के वयोवृद्ध व प्रदेश सहसंयोजक वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ भाजपा के रविन्द्र जैन जुरहरा ने मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार को ज्ञापन देकर संवत्सरी 8 सितम्बर व अनन्त चतुर्दशी 17 सितम्बर दोनो दिवसों को सभी मांस विक्रय केंद्र, पशु वध प्रतिष्ठान, बूचड़खाने, अंडा मछली विक्रय केंद्र को बंद रखने की मांग की है। उन्होंने नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री झाबरमल खर्रा को मुख्यमंत्री ने नाम ज्ञापन सौपां जिस पर उन्होंने अतिशीघ्र आदेश प्रसारित करने का आश्वासन दिया। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री संजय जैन बड़जात्या ने बताया कि जैन पत्रकार महासंघ के अध्यक्ष रमेश तिजारिया, पूर्व नि:शक्तजन आयुक्त खिल्लीमल जैन अलवर ने भी इसी आशय का पत्र मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार को लिख बूचड़खाने बंद रखने की मांग की है।

-संजय जैन बड़जात्या

नयापारा राजीम में भक्तांबर शिविर

रायपुर (विश्व परिवार)। दिगम्बर जैन भवन में आज स्वाध्याय श्री माताजी एवं चर्या श्री माताजी के सानिध्य में भक्ताम्बर पाठ के 41 एवं 42 में काव्य का पाठन किया गया एवं उस पर चर्या श्री माताजी ने प्रवचन कर भक्तांबर की महिमा के बारे में बताया भक्तांबर शिविर के आज के पुंयर्जक श्री किशोर सिंघई अनिता सिंघई परिवार सनत चौधरी परिवार राजेंद्र कुमार रूपचंद परिवार सूरज जैन पांडुका वाले परिवार एवं ममता जैन रायपुर एवं मून सिंघई सुधा सिंघई परिवार रहे आज के कार्यक्रम में इन परिवारों के द्वारा भक्तांबर कलश की मंत्रो के उच्चारण के साथ स्थापना की गई। भक्तांबर शिविर अंतिम चरण पर चल रहा है मात्र तीन दिन शेष बचे है। शिविर के अंत मे 7, 9, 24, को सरस्वती पूजाविधान का आयोजन किया जाएगा। पर्यूषण पर्व के बाद धूम धाम से विशाल भक्ताम्बर विधान का आयोजन चातुर्मास कमेटी के द्वारा किया जायेगा। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष अजीत चौधरी एवम सचिव अंबर सिंघई ने जानकारी दी कि उक्त भक्तांबर शिविर के पश्चात सभी पुण्यार्जक परिवारों को प्रदान किए जाएंगे। **-किशोर जैन**

उमरपोटी-धनोरा अंडर-पास की मरम्मत हेतु सड़क यातायात बंद रहने हेतु सूचना

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर रेल मंडल के दुर्ग सेक्शन के मरौदा-पाउवारा स्टेशन के मध्य स्थित रेलवे लाईन पर डीडी -11 मार्ग पर बने अंडर पास जो कि उमरपोटी- धनोरा पहुंच मार्ग से जुड़ा हुआ है अंडर पास क्रमांक DD:11 (ब्रिज क्र.-20/A) दिनांक 05.09.2024 को सुबह 08:00 बजे से दिनांक 10.09.2024 को रात 00:00 बजे तक बंद रहेगा। अत: सड़क वाहन इस अंडर पास से आवागमन करने के स्थान पर रिसाली- मरोदा की तरफ से समपार फाटक क्रमांक.DD-8-मार्ग से होकर आना जाना कर सकते हैं। अंडर पास की मरम्मत करना रेल यातायात ,यात्रियों व आम जनता की संरक्षा की दृष्टि से अति आवश्यक है।

मुख्यमंत्री साय बिलासपुर जिला अधिवक्ता संघ के शपथ ग्रहण समारोह में हुए शामिल

मुख्यमंत्री ने अधिवक्ताओं के लिए नवीन सामुदायिक भवन बनाने की घोषणा की

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय आज बिलासपुर जिला अधिवक्ता संघ के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। उन्होंने संघ के नव निर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। मुख्यमंत्री ने संघ की मांग पर जिला न्यायालय परिसर में नये सामुदायिक भवन बनाने की घोषणा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री दाऊराम चंद्रवंशी ने की। अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव मौजूद थे। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में महाधिवक्ता श्री प्रफुल्ल एन भारत, विधायक श्री अमर अग्रवाल, श्री धरमलाल कौशिक, श्री दिलीप लहरिया, श्री अटल श्रीवास्तव, श्री सुशांत शुक्ला, महापौर श्री रामशरण यादव, प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती नीता यादव, संरक्षक अधिवक्ता संघ श्री एसके सिन्हा एवं प्रतिनिधि भारतीय विधिज्ञ परिषद श्री शैलेन्द्र दुबे उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने जिला अधिवक्ता संघ के नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि बिलासपुर का जिला अधिवक्ता संघ प्रदेश के अधिवक्ताओं का सबसे पुराना संगठन है। फिलहाल साढ़े 3 हजार विद्वान अधिवक्ता इस संघ से जुड़े है। उन्होंने कहा कि इस संस्था का ऐतिहासिक महत्व रहा है। इनके सदस्यों ने आजादी की लड़ाई में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। यही नहीं बल्कि बड़े-बड़े राजनेता और न्यायविद इस संगठन ने पैदा किये हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिवक्ताओं के समक्ष कई समस्याएं मौजूद हैं। लेकिन उन्होंने इनकी परवाह किये बिना लोगों को न्याय दिलाने में महती भूमिका अदा कर रहे हैं। गरीबी-अमीरी का भेदभाव किये बिना सभी को समभाव से न्याय दिलाने में जिला अधिवक्ता संघ ने मिसाल पेश की है। मुख्यमंत्री ने संघ की मांग पर राजस्व मण्डल एवं स्थायी लोक अदालत में सदस्यों की नियुक्ति जल्द करने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने तीजा एवं गणेश चतुर्थी महापर्व की बधाई एवं शुभकामनाएं भी दी।

उप मुख्यमंत्री श्री अरूण साव ने कहा कि जिला अधिवक्ता संघ का इतिहास गौरवशाली रहा है। यहां से निकले विधिवेत्ता और राजनेताओं ने बिलासपुर का गौरव बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि पिछले 10-12 बरसों में न्यायालयों में सुविधाओं का तीव्र गति से विकास हुआ है। आगे भी यह सिलसिला जारी रहेगा। जिला अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष श्री दाऊराम चंद्रवंशी ने स्वागत भाषण दिया। इस अवसर पर कलेक्टर अवनीश शरण, एसपी रजनेश सिंह सहित न्यायाधीश गण, अधिवक्ता एवं शहर के गणमान्य नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर गुरूवार 05 सितंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

पड़ोसी युवक ने किया मानसिक विकलांग युवती से दुष्कर्म

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। जिले की डोंगरगांव थाना पुलिस ने एक मानसिक विकलांग युवती से दुष्कर्म करने के मामले में उसके पड़ासी को गिरफ्तार किया है। मामले में पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा- 376 (2)(रु) (ह्न) , 450 , 506 के तहत अपराध दर्ज कर जेल भेज दिया है। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक रविवार को डोंगरगांव थाने में एक महिला ने अपने बेटी के साथ दुष्कर्म होने का लिखित आवेदन दिया। जिसपर पर अपराध धारा सदर का अपराध कायम कर विवेचना मे लिया गया। प्रकरण के गंभीरता को देखते हुये त्वरित कार्यवाही करते हुये तत्काल आरोपी भैरोलाल साहू को उसके घर से घेराबंदी कर पकड़ा गया। आरोपी से पुछताछ करने पर बताया कि उसका पीड़िता के घर आना जाना लगा रहता था, पीड़िता थोड़ी कमजोर दिमाग की होने व घर मे अकेली होने का फायदा उठाते हुए उसने पीड़िता को डरा-धमकाकर जबरदस्ती बलात्कार किया एवं घटना के संबंध मे किसी अन्य को बताने से जान से मारने की धमकी दी थी। बता दें कि दुष्कर्म के बाद प्रार्थिया को पीड़िता के तबियत ठीक नही होने तथा ईलाज के दौरान 05 माह की गर्भवती होने की बात सामने आने पर घटना का खुलासा हुआ जिसके बाद रिपोर्ट दर्ज कराई गई।

नौ लिटर अवैध शराब के साथ आरोपी पकड़ाया

गरियाबंद(विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय से दो किलोमीटर दूर मजरकट्टा में अवैध शराब के साथ आरोपी को कोतवाली पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया।मामले में मिली जानकारी के अनुसार 3 सितंबर को कोतवाली प्रभारी ओम प्रकाश यादव को मुखबिर से सूचना मिला की ग्राम मजरकट्टा में एक व्यक्ति के द्वारा अवैध शराब बेचने के लिए रखा है।इस जानकारी पर कोतवाली प्रभारी के द्वारा कोतवाली से प्रधान आरक्षक प्रदीप सिंहा,डीलेश्वर साहू मुरारी,दिलेश्वरी कवर व स्वाति मरकाम की टीम बनाकर कर मौके पर भेजा गया।मुखबीर सूचना के जानकारी अनुसार ग्राम मजरकट्टा निवासी सूरज बारले अपने घर बाड़ी में अवैध रूप से कच्ची महुआ शराब छुपाकर रखा था। जिसपर गवाह के समक्ष आरोपी सूरज बारले के घर पहुंचकर घेराबंदी किया जो तलाशी पर उसके बाड़ी से लगे सैप्टीक के पास 4 नग हरा रंग के 2 लीटर वाली प्लास्टिक बॉटल में भरा 8 लीटर एवं 1 नग सफेद रंग के 2 लीटर वाली प्लास्टिक बॉटल में आधा भरा 1 लीटर कुल 9 लीटर कच्ची महुआ शराब बरामद कर सूरज बारले को उक्त शराब कब्जा में रखने विक्रय करने के संबंध में दस्तावेज पेश करने धारा 94 बीएनएसएस का नोटिस दिया गया जो शराब रखने बिक्री करने के संबंध में कोई दस्तावेज न होने पर उक्त बरामद 9 लीटर कच्ची महुआ शराब को गवाहों के समक्ष जप्त किया गया।

नगर में जगह-जगह हो रहा राष्ट्रीय ध्वज का अपमान

गरियाबंद(विश्व परिवार)। प्रशासन व नेताओं ने जम कर तिरंगा यात्रा तो मनाया पर देश के गौरव के प्रतीक तिरंगे झंडे के गली गली में हो रहे अवमानना को नही रोक पा रहे है। देश के झंडे को लेकर बने नियमों कि जंहा एक ओर जम कर धज्जिया उड़ाई जा रही है वंही गन्दा,फ्टा हुआ डंडे में सिमटे आर पार निकला झंडा कोई नही हटा रहा। घर घर झंडा लगाने जंहा अभियान चलाया गया वही झंडे के हो रहे अपमान को सभी लोग देख कर भी अनदेखा कर रहे है।गत दिनों एक निजी संस्थान स्कूल के द्वार पर यूं ही तिंरगा दरवाजे के दोनों ओर शोभा कि वस्तु को तरह बे तरतिब ढंग से लगा हुआ देखा गया इस स्कूल के बच्चे रोज इस तिरंगे को देख रहे है.जंहा देश के भावी नागरिक तैयार हो रहे है उनके पटल पर राष्ट्रीय ध्वज को लेकर क्या छबि तैयार हो रही होंगी। लोगो को मुफ्त में मिले झंडे कि कदर नही है वंही हर जगह तिरगा लगाने के चक्कर में कई शासकीय, अर्धशासकीय कार्यालय के बाहर बेर्तिब राष्ट्रीय ध्वज लगे हुए है जिसतरह उत्साह दिखा कर झंडा लगाया गया था उसी उत्साह से उसका सम्मान करना प्रत्येक भारतीय का परम कर्तव्य है।

संपूर्णता अभियान के तहत निकाली जागरूकता रैली

सुकमा(विश्व परिवार)। नीति आयोग अन्तर्गत संपूर्णता अभियान के तहत सुकमा जिले में 6 इंडिकेटर को संतृप्त करने कलेक्टर हरिस एस के निर्देशन एवं जिला पंचायत सीईओ नम्रता जैन के कुशल मार्गदर्शन में निरंतर प्रयास कर रही है। इसी परिपेक्ष में आंकाक्षी ब्लॉक कोंटा अंतर्गत ग्राम मराइगुड़ा, गोलापल्ली में साक्षरता अभियान, पर्यावरण संरक्षण, हेल्थ चेकअप, पोषण सप्ताह, व स्व सहायता समूह गठन और रिवॉल्विंग फण्ड प्रदाय पर चर्चा किया गया। इसके साथ ही जागरूकता रैली में आंगनवाड़ी केन्द्रों पर पोषण आहार, बच्चों के स्वास्थ्य की मॉनिटरिंग के लिए कार्यकर्ताओं द्वारा नियमित रूप से उनके वजन व ऊंचाई का नाप लेने तथा पोषण ट्रेकर सहित विभिन्न पोर्टल पर नियमित रूप से डाटा अपडेट करने पर जानकारी दी गई।

जल जीवन मिशन के कार्यों की कलेक्टर ने की समीक्षा

अधूरे एवं अपूर्ण निर्माण कार्य करने वाले 10 ठेकेदारों के अनुबंध निरस्त

कांकेर(विश्व परिवार)। कलेक्टर निलेश महादेव क्षीरसागर ने आज जिला जल एवं स्वच्छता समिति की बैठक लेकर जल जीवन मिशन के निर्माण कार्यों के अब तक की प्रगति की जानकारी ली तथा अधूरे निर्माण कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण कराने के निर्देश कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग को दिए। इस दौरान कार्यपालन अभियंता ने बताया कि योजना के तहत् अधूरे एवं अपूर्ण स्थिति में कार्य को छोड़ने वाले ठेकेदारों एवं फर्मों का अनुबंध निरस्त किया गया है। जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आज दोपहर को आयोजित बैठक में कलेक्टर ने जल जीवन मिशन के तहत् विभिन्न जल प्रदाय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए लंबित कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया। कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी बी.एन. भोयर ने बताया कि पिछले दो माह में एफएचटीसी के कार्यों में 5 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। उन्होंने बताया कि जिले में भौतिक उपलब्धि का प्रतिशत 64 (69774 कनेक्शन) है। इसी तरह 72.22 प्रतिशत घरों में घरेलू नल कनेक्शन प्रारंभ हो चुके हैं। इसके अलावा उच्च स्तरीय जलागार निर्माण कार्यों की समीक्षा के दौरान बताया गया कि 192 टंकी निर्माण का कार्य पूर्ण हो चुका है, जबकि 191 कार्य प्रगतिरत है। इस पर कलेक्टर ने स्रोतविहीन योजनाओं को शुरू करने शीघ्रता से नवीन स्रोत विकसित करने के निर्देश दिए। बैठक में यह भी बताया कि मिशन के तहत् सोलर पंप स्थापित करने क्रेडा द्वारा 2209 कार्यों में से 1520 पूर्ण हो चुके हैं। कार्यपालन अभियंता भोयर ने बताया कि जलजीवन मिशन के तहत् जिन अनुबंधित ठेकेदारों ने लंबी अवधि तक कार्यों को पूर्ण नहीं किया, उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी कर उनसे स्पष्टीकरण मांगा गया था तथा जवाब नहीं मिलने पर संबंधित फर्म को पुन: कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। तदुपरांत कार्य प्रारंभ करने में रूचि नहीं लेने वाली सभी 10 फर्मों का अनुबंध निरस्त कर उनके व्यय एवं जोखिम पर अन्य एजेंसियों से कार्य कराए जाने का आदेश जारी किया गया। इन फर्मों में मेसर्स अरिहंत इंटीरियर केशकाल, मेसर्स अविनाश एसोसिएट धमतरी, निरंजन सिंह ठाकुर कांकेर, मेसर्स ध्रुवा कंस्ट्रक्शन कांकेर, मेसर्स स्वेपटेक इन्फ्रा दुर्ग, अमित यादव दुर्ग, मेसर्स शिल्पी कंस्ट्रक्शन दुर्ग, मेसर्स के.आर. इंटरप्राईजेस रायपुर, मेसर्स ए.वाय.वी इन्फ्रास्ट्रक्चर कांकेर तथा मेसर्स विजय व्ही. सालुंके रायपुर शामिल हैं। बैठक में कलेक्टर ने जल जीवन मिशन के सभी प्रगतिरत कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण कराने और आम जनता को स्वच्छ पेयजल एवं निस्तारी जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी को दिए। इस अवसर पर समिति के सदस्य एवं संबंधित विभाग के अधिकारीगण मौजूद थे।

जनकल्याणकारी योजनाओं से ग्रामीणों को लाभान्वित करने की दिशा में करें कार्य -कलेक्टर

सुकमा(विश्व परिवार)। कलेक्टर हरिस एस. ने मंगलवार को कलेक्टोरेट के सभागार में आयोजित समय-सीमा की बैठक के दौरान शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं, विभागीय कार्यों सहित जिले में नियद नेल्लानार योजनांतर्गत कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने कहा कि शासन की योजनाओं का लाभ ग्रामीणों को सुनिश्चित करने के साथ ही राशन कार्ड बनाने हेतु लम्बित प्रकरणों को निराकरण करने के निर्देश दिए। किसान सम्मान निधि एवम् किसान क्रेडिट कार्ड बनाने के संबंध में निर्देश दिए। उन्होंने आवास योजनांतर्गत स्थाई प्रतीक्षा सूची में हितग्राहियों के आवश्यक दस्तावेज सप्ताह के अंत तक शीघ्र जमा कराने के निर्देश दिए। साथ ही जानकारी पोर्टल में नियमित रूप से अपडेट करने पर जोर दिया। कलेक्टर ने संपूर्णता अभियान के अंतर्गत जिले में चल रहे रहे गतिविधियों की समीक्षा की और स्वायल टेस्टिंग 2 सप्ताह के भीतर पूर्ण कर कृषकों को स्वायल हैल्थ कार्ड वितरण करने के निर्देश दिए। शासन की योजनाओं का लाभ लेने के लिए ग्रामीणों के आधार कार्ड आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु कार्योजना बनाकर ग्रामीणों को मॉबलाइज़ कर लाभान्वित करने के निर्देश दिए। तहसील कर्मचारियों को कार्यालय संबन्धित कार्यशाला आयोजन करने के और जाति निवासी प्रमाण पत्र हेतु आवाश्यक निर्देश दिए। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना हेतु पात्र महिलाओं का चिन्हांकन कर, पंजीयन करने के निर्देश दिए। बैठक में पीडीएस भंडारण, नक्सल पुनर्वास समिति, पीडीएस एवं आंगनवाडी निर्माण कार्यों की सहित विभागीय कार्यों की समीक्षा की। बैठक में जिला पंचायत सीईओ नम्रता जैन, अपर कलेक्टर गजेन्द्र सिंह ठाकुर, संयुक्त कलेक्टर सूरज कश्यप, एसडीएम तहसलीदार, जनपद सीईओ सहित जिला स्तरीय अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

कलेक्टर ने मरौदा में उल्लास नवभारत साक्षरता केन्द्र का किया लोकार्पण

साक्षरता जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने आज शासकीय प्राथमिक शाला परिसर मरौदा के अतिरिक्त कक्ष में जिले का पहला उल्लास साक्षरता केन्द्र का लोकार्पण किया। साक्षरता केन्द्र असाक्षरों को साक्षर बनाने का एक विशेष अध्ययन केन्द्र है। यहां स्वयंसेवी शिक्षक एवं गांव तथा आसपास के असाक्षरजन केन्द्र में आकर बुनियादी शिक्षा हासिल कर सकेंगे। इस अवसर पर कलेक्टर श्री अग्रवाल ने ग्रामीणों एवं स्वयंसेवी शिक्षकों को बुनियादी शिक्षा से संबंधित आवश्यक किताबों का वितरण भी किया। साक्षरता केन्द्र के लोकार्पण अवसर पर कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा जिले के 15 वर्ष से अधिक उम्र के असाक्षरों को साक्षर बनाने के लिए उल्लास नवभारत साक्षरता कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। इसके तहत स्वयंसेवी शिक्षकों एवं अधिकारी-कर्मचारी एवं आमजनों के सहयोग से असाक्षरों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान, महत्वपूर्ण जीवन कौशल, व्यावसायिक कौशल विकास एवं सतत शिक्षा प्रदान किया जायेगा। इसके लिए ग्राम पंचायतों में उल्लास साक्षरता केन्द्र की स्थापना की जा रही है। कलेक्टर ने साक्षरता रथ को किया रवाना - उल्लास साक्षरता कार्यक्रम के तहत कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कलेक्टोरेट परिसर से साक्षरता जागरूता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसका उद्देश्य साक्षरता के प्रति जन जागरूकता फैलाना एवं समाज के सभी वर्गो में शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना है। जागरूकता रथ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण कर जन समुदाय को साक्षरता के लिए जागरूक करेगा।

कलेक्टर दीपक कुमार ने जनदर्शन में सुनी आम नागरिकों की समस्याएं

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने आज जनदर्षन में जिले के अलग-अलग क्षेत्र से आये लोगों की मांग, समस्याएं एवं शिकायतें सुनी। कलेक्टर अग्रवाल ने आज जनदर्शन में 77 लोगों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुना और संबंधित अधिकारियों को आवेदनों का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए। जनदर्शन में ग्राम सेम्हरा के जितेन्द्र साहू ने श्रम कार्ड सुधारने, ग्राम कुटेना के अनुकुमार महिलांगे ने ऋण पुस्तिका में रकबा दर्ज कराने, ग्राम मुरमुरा के खेलूराम साहू ने पशु शेड निर्माण हेतु, ग्राम भेन्ड्री के समस्त ग्रामवासी ने अतिक्रमण हटवाने, ग्राम बरबाहली की कु. भूमिका प्रधान ने रोजगार प्रदाय करने, ग्राम बिरोडार के प्राथमिक शाला एवं माध्यमिक शाला में आहता निर्माण एवं शाला परिसर पर विद्युत पोल हटाने, ग्राम घटौद की धनेष्वरी सिन्हा ने मुख्यमंत्री आवास की द्वितीय किस्त की राषि दिलाने, ग्राम रांवड़ की ओम कुमारी ने विद्यवा पेंषन दिलाने, गरियाबंद वार्ड नम्बर - 02 के लोगों ने 11 के.व्ही बिजली तार की ऊंचाई बढ़ाने एवं नया तार लगााने, कुण्डेलभाठा धान संग्रहण केन्द्र के श्रमिकों ने मजदूरी भुगतान एवं पीएफकी राषि दिलाने, ग्राम कोसमबुड़ा के विष्णुदास, देषकुमार, गुवाल एवं उर्मिला बाई ने तेन्दूपत्ता की राषि दिलाने, ग्राम खुसरूपाली एवं नवाडीह के लोगों ने मुख्यमंत्री सड़क योजना के तहत छुरा एवं फिंगेष्वर मुख्य मार्ग तक सड़क निर्माण कराने आवेदन प्रस्तुत किये।

बाला कॉन्सेप्ट का क्रियान्वयन के संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी ने किया पोटा केबिन गुमड़ा का निरीक्षण

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। बाला (बिल्डिंग अज लर्निंग ऐड) अवधारणा के तहत किए जा रहे शैक्षिक एवं भौतिक विकास कार्यों के संबंध में जिला शिक्षा अधिकारी एस के अंबस्ता ने पीएम स्कूल पोटा केबिन गुमडा का निरीक्षण किया। ज्ञात हो कि इस अवधारणा के माध्यम से स्कूल की भौतिक संरचनाओं को शैक्षणिक संसाधनों के रूप में उपयोग किया जा रहा है, जिससे छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को और अधिक रोचक और प्रभावी बनाया जा सके। निरीक्षण के दौरान डीईओ ने स्कूल की कक्षाओं, दीवारों, आंगन एवं अन्य संरचनाओं पर ''बाला'' कॉन्सेप्ट के अंतर्गत की गई रचनात्मक गतिविधियों जैसे खेल खेल में शिक्षण एवं सीखने संरचनाओं को सराहा। उक्त पोटा केबिन में छात्रों द्वारा स्कूल की दीवारें, फर्श, आंगनों तथा अन्य स्थान पर गणितीय और भाषा से संबंधित जानकारी दी गई थी। इस प्रकार छात्र खेल-खेल में ही सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो रहे हैं। उल्लेखनीय है कि ''बाला'' अवधारणा के अंतर्गत स्कूल की दीवारों को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि बच्चे उन्हें खोजने और सीखने के अवसर के रूप में उपयोग कर सकें। डिजाइन में स्थानीय और सांस्कृतिक तत्वों का समावेश किया गया है, जिससे बच्चों को अपनी परिवेशी दुनिया से जोड़कर सीखने का अवसर मिलता है। विशेष रूप से गणित और भाषा की दीवारें डिजाइन की गई हैं, जिनमें गिनती, जोड़, घटाव, गुणा, और भाग के साथ-साथ भाषा के खेल-आधारित शिक्षण जैसे कि क्रॉसवर्ड, साँप-सीढ़ी के खेल और कार्यशील मॉडल शामिल हैं। इन मॉडलों के माध्यम से बच्चे अक्षर पहचान, कहानी निर्माण और अन्य महत्वपूर्ण कौशल सीखते हैं। इस निरीक्षण के दौरान पीएम विद्यालय नोडल अधिकारी कमल कर्मकार, वी एस ताती, विकासखंड स्रोत समन्वयक गीदम जितेंद्र सिंह चौहान, संकुल समन्वयक गया प्रसाद नाग, शिक्षार्थ ट्रस्ट समन्वयक सुमन और विद्यालय के समस्त शिक्षक उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने एनआईसी कक्ष से ली ऑनलाइन साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक दिए निर्देश

नियद नेल्लानार'' योजना से संबंधित विभाग अपने निर्माण कार्यों को पूरी तत्परता से करना सुनिश्चित करें

दंतेवाड़ा(विश्व परिवार)। कलेक्टर मयंक चतुर्वेदी द्वारा एनआईसी कक्ष से ऑनलाइन लिंक के माध्यम से साप्ताहिक समय-सीमा की बैठक ली गई। इस ऑनलाइन बैठक में कलेक्टर ने समय-सीमा की लंबित प्रकरणों की जानकारी ली। कलेक्टर ने सर्व प्रथम नियद नेल्लानार योजना की विस्तृत रूप से समीक्षा करते हुए कहा कि नियद नेल्लानार योजना शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता वाली योजनाओं मे से है अत: इसके तहत संबंधित विभाग अपने विभिन्न प्रकार के निमार्ण कार्य को समय सीमा और त्वरित गति से संपन्न करें। इस क्रम में उन्होंने ग्राम मैलावाड़ा में तारबाड़ी, फेसिंग के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि तारबाड़ी और फेसिंग कार्य के लिए चयनित कृषकों की भूमि पर अविलंब कार्य होने चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने अभी हाल ही में जावंगा में प्रारंभ हुए इंदिरा कला विद्यालय में तत्काल कक्षाएं प्रारंभ करने, तीनों अनुविभागों में खाता विभाजन प्रकरणों को तत्काल निराकरण, विकासखण्ड कटेकल्याण के प्रतापगिरी स्थित दुलार दई मंदिर के जीर्णोद्धार तथा वहां तक पहुंचने के मार्ग को सुगम बनाने, स्वास्थ्य विभाग संबंधित स्वास्थ्य मानकों के संतृप्तिकरण, मनरेगा निर्माण कार्य के तहत राशि आहरण जैसे विभिन्न प्रकरणों पर प्रगति एवं किए जाने वाले कार्यवाही की जानकारी ली। इसके अलावा कलेक्टर चतुर्वेदी ने साप्ताहिक समय-सीमा के लंबित प्रकरणों को तत्काल समन्वय स्थापित कर निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए विभाग प्रमुखों से बारी-बारी समय-सीमा के प्रकरणों के संबंध में समीक्षा की ।

बहन को तीजा लेने आ रहे भाई और उसके दोस्त की सड़क हादसे में मौत

गरियाबंद(विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय से सात किलोमीटर दूर सड़क दुर्घटना में दो लोगो की दर्दनाक मौत हो गई है।मिली जानकारी के अनुसार नगरी वार्ड नंबर दो निवासी गजेंद्र नेताम और दयालु नेताम दोनों मोटरसाकिल से तीजा लेने अपनी बहन के घर कोड़ो हरदी जा रहे थे इसी दौरान कोड़ो हरदी तिराहा मोड़ के पास किसी अज्ञात गाड़ी ने इनके बाइक को इतनी बुरी तरीके से ठोकर मार दिया जिससे मौके पर ही दोनों युवकों की मौत हो गई।युवकों की उम्र लगभग 20 से 22 वर्ष की बीच बताया जा रहा है। मृत युवक का नाम गजेंद्र नेताम दयालु नेताम जो की ग्राम नगरी निवासी है फ़िलहाल दुर्घटना का कारण स्पष्ट नहीं हुआ है।पुलिस से मिली जानकरी के अनुसार प्रथम दृष्टिया से ऐसा प्रतीत हो रहा है किसी अज्ञात वाहन की ठोकर से इन बाइक सवार युवकों की मौत हुई है।घटना की जानकारी मिलते ही कोतवाली पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और दोनों मृतकों के शव को जिला अपस्ताल लेकर आए और पोस्टमार्टम कराते हुए उनके परिजनों को सूचित कर शव उनके सुपुर्द किया गया।वही घटना पर धारा 106(1 ,) बिएनएस कायम कर अज्ञात वाहन की तलाश किया जा रहा है।

व्यापार समाचार

डैम कैपिटल एडवाइजर्स ने सेबी के पास दाखिल किया डीआरएचपी

नईदिल्ली। डैम कैपिटल एडवाइजर्स लिमिटेड ने पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल किया है। डैम कैपिटल वित्त वर्ष 2022 से 2024 तक राजस्व सीएजीआर के हिसाब से भारत में सबसे तेजी से बढ़ने वाला निवेश बैंक है। अपने समकक्षों की तुलना में डैम कैपिटल का वित्त वर्ष 2024 में प्रॉफिट मार्जिन सबसे अधिक है। वित्त वर्ष 2024 में आईपीओ और क्यूआईपी की संख्या के आधार पर 12.1त्न बाजार हिस्सेदारी के साथ यह भारत के अग्रणी निवेश बैंकों में से एक था। डीएएम कैपिटल (द्व) निवेश बैंकिंग के क्षेत्रों में इक्विटी कैपिटल मार्केट्स (ईसीएम), विलय और अधिग्रहण (एम एंड ए), निजी इक्विटी (पीई), और संरचित वित्त सलाहकार; और (द्वद्व) ब्रोकिंग और शोध शामिल संस्थागत इक्विटी के क्षेत्रों में वित्तीय समाधानों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है। कंपनी के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम में इन्वैस्टर सेलिंग शेयरहोल्डर्स – मल्टीपल्स अल्टरनेट एसेट मैनेजमेंट, आरबीएल बैंक, ईज़ी एक्सेस फइनेंशियल सर्विसेज और नरोत्तम सेखसरिया द्वारा 32.06 मिलियन शेयरों तक की ऑफर फॉर सेल शामिल है। प्रमोटर धर्मेश अनिल मेहता भी अपनी हिस्सेदारी का एक छोटा हिस्सा बेच रहे हैं। नुवामा वेल्थ मैनेजमेंट लिमिटेड आईपीओ के बुक रनिंग लीड मैनेजर हैं।

स्टार हेल्थ इंश्योरेंस बनी ब्रेल लिपि में बीमा पॉलिसी लॉन्च करने वाली भारत की पहली कंपनी

मुंबई। भारत की सबसे बड़ी खुदरा स्वास्थ्य बीमा कंपनी, स्टार हेल्थ एंड अलाइड इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (स्टार हेल्थ इंश्योरेंस) ने आज उद्योग में पहली बार ब्रेल लिपि में एक बीमा पॉलिसी लॉन्च करने की घोषणा की। यह पॉलिसी समावेश और सुलभता के प्रति स्टार हेल्थ इंश्योरेंस की प्रतिबद्धता बढ़ाते हुए, यह सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है कि दृष्टिबाधित और नेत्रहीन लोगों तक जानकारी की पहुंच हो और अपने स्वास्थ्य तथा वित्त संबंधी मामलों पर स्वतंत्र निर्णय ले सकें। स्टार हेल्थ ने भारत में मौजूद 34 मिलियन दृष्टिबाधित/दृष्टिहीन लोगों को आय सृजन के अवसरों के साथ आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए विविधता और वित्तीय समावेश अभियान भी शुरू किया है। यह समाज के इस वंचित, हाशिए पर पड़े वर्ग को प्रशिक्षण और कौशल प्रदान कर उन्हें कंपनी के साथ स्वास्थ्य बीमा एजेंट बनने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रक्रिया की खूबसूरती यह है कि यह उन्हें अपनी गति से, अपने परिचित परिवेश में काम करने और अपने जीवन की ज़िम्मेदारी खुद संभालने में मदद करता है।

लैंसर कंटेनर लाइन्स लिमिटेड ने 10,000 टीईयू (कंटेनर्स) लीज पर देने के लिए इंडोनेशियाई कंपनी के साथ करार किया

मुंबई : देश की अग्रणी एकीकृत शिपिंग और लॉजिस्टिक्स समाधान प्रदाताओं में से एक, 'लैंसर कंटेनर लाइन्स लिमिटेड' ने एक प्रमुख इंडोनेशियाई कंपनी, पी.टी.मैप ट्रांस लॉजिस्टिक, सुरबाया, के साथ 10,000 टीईयू (बीस-फुट कंटेनर और चालीस-फुट कंटेनर) लीज पर देने के लिए एक करार किया है। करार पर लैंसर कंटेनर लाइन्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री खालिक चटाईवाला और पी.टी.मैप ट्रांस लॉजिस्टिक, सुरबाया के निदेशक श्री प्रफुल्ल झा की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। लैंसर कंटेनर्स लाइन्स लिमिटेड का प्रबंधन इस रणनीतिक करार को लीजिंग गतिविधियों को बढ़ाने में एक कदम के रूप में देखता है जिससे कंपनी को अपने व्यवसाय का विस्तार करने और शेयरधारकों के मूल्य को बढ़ाने में मदद मिलती है। इस करार से कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है, क्योंकि इससे कंपनी का समग्र विकास होगा जिसके परिणामस्वरूप कंपनीकी बाजार स्थिति मजबूत होगी। इससे पहले कंपनी ने अगले कुछ वर्षों के लिए अपनी मेगा विस्तार योजनाओं की घोषणा की थी। कंपनी का लक्ष्य वित्त वर्ष 2026 तक अपनी टीईयू (बीस-फुट कंटेनर और चालीस-फुट कंटेनर) क्षमता को वित्त वर्ष 2024 में दर्ज लगभग 20,000 टीईयू से बढ़ाकर 45,000 टीईयू तक करना है और बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए कंपनी हर महीने 200-300 कंटेनरों को शामिल करके अपनी कंटेनर इन्वेंट्री को लगातार बढ़ाने का इरादा रखती है। कंपनी का लक्ष्य पूरी तरह से एकीकृत सेवा प्रदाता बनना है और वह सक्रिय रूप से एक नया जहाज खरीदने के अवसर तलाश रही है। इन उपायों से आने वाले वर्षों में स्वस्थ राजस्व और मार्जिन वृद्धि प्राप्त होने की उम्मीद है।

फ़िलाटेक्स फ़ैशन्स लिमिटेड का खनन कार्य करने वाली सहायक कंपनी ने हासिल किए कुल 661 करोड़ रुपए के निर्यात ऑर्डर

हैदराबाद : हैदराबाद स्थित अग्रणी सॉक्स एवं कॉटन उत्पाद निर्माता कंपनी फिलाटेक्स फैशन लिमिटेड (BSE – 532022, NSE – FILATFASH) की सहायक कंपनी फिलाटेक्स माइंस एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड को एक महीने में कुल मिलाकर 661 करोड़ रुपए (78,875,000 डॉलर) के निर्यात ऑर्डर हासिल हुए हैं। खनन व्यवसाय में कार्यरत कंपनी की सहायक कंपनी, फिलाटेक्स माइंस एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड ने 29 अगस्त, 2024 को घोषणा की कि उसे 1,59,000 टन पॉलिश्ड मार्बल टाइलों की आपूर्ति के लिए गिनी गणराज्य स्थित कंपनी, सोसाइटी डीआईएमओ – बीटीपी एसएआरएल (सडीबीएस) से 5 वर्षों से अधिक की अवधि के लिए ऑर्डर मिला है, जिनकी कीमत 43,875,000 अमेरिकी डॉलर (करीब 368 करोड़ रुपये) होने का अनुमान है। एसडीबीएस 14 अफ्रीकी देशों में 5000 से अधिक डीलर नेटवर्क के साथ ग्रेनाइट और मार्बल की मुख्य वितरक कंपनी है। यह कंपनी की खनन सहायक कंपनी के लिए दूसरा निर्यात ऑर्डर है। इससे पहले 26 जुलाई, 2024 को कंपनी को 7 साल की अवधि में 35 मिलियन अमेरिकी डॉलर (करीब 293 करोड़ रुपये) मूल्य के 2,97,388 मीट्रिक टन सफेद मार्बल की आपूर्ति का ऑर्डर मिला था।

बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में कड़ी प्रतिस्पर्धा है हमेशा मुकाबला 50-50 रहा: कमिंस

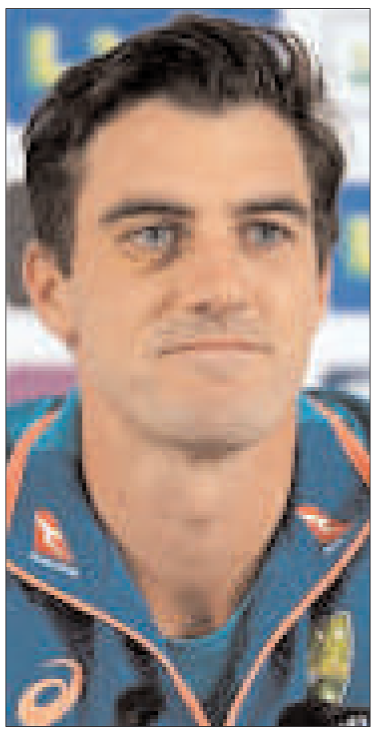

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया की टीमें बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में आमने-सामने होंगी। इस सीरीज में अभी करीब दो महीने से ज्यादा का समय बाकी है, लेकिन क्रिकेट जगत के गलियारों में इसकी चर्चा तेज हो गई है। सक्रिय क्रिकेटर से लेकर पूर्व क्रिकेटर तक दोनों टीमों की क्षमता पर बयान दे रहे हैं, और अब इस कड़ी में ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट कप्तान पैट कमिंस का नाम जुड़ गया है। कमिंस ने कहा, बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा है और हमेशा मुकाबला 50-50 का रहा है। 2024/25 बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में भारत और ऑस्ट्रेलिया क्रमशः पर्थ, एडिलेड, ब्रिस्बेन, मेलबर्न और सिडनी में महत्वपूर्ण पांच मैचों की श्रृंखला में आमने-सामने होंगे। भारत ने 2018/19 और 2020/21 में ऑस्ट्रेलिया में आयोजित बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पिछले दो संस्करण जीते हैं। कमिंस ने हाल के वर्षों में भारत के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के सामने आई चुनौतियों को स्वीकार किया। हालांकि, असफलताओं के बावजूद ऑस्ट्रेलियाई कप्तान आत्मविश्वास से भरे हुए हैं। ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम के कप्तान ने भारत के खिलाफ पिछली असफलताओं को नहीं, बल्कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में उनकी हालिया जीत को ध्यान में रखा है। कमिंस ने स्टार स्पोर्ट्स से कहा, ऑस्ट्रेलिया में पिछली दो सीरीज में हम सफल नहीं रहे, इसलिए काफी समय हो गया है। लेकिन अब समय आ गया है कि हम अपनी गलतियों को सुधारें। आप जानते ही होंगे कि हमने उनके खिलाफ कई बार खेला है, जहां उन्होंने हमें हराया है, लेकिन हमने उनके खिलाफ कई बार जीत भी दर्ज की है, जिससे हमें आत्मविश्वास मिलेगा। हमें विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप की जीत को ध्यान में रखना चाहिए। उस मुकाबले में हम शीर्ष पर रहे। भारत के खिलाफ हमारा मुकाबला हमेशा बहुत प्रतिस्पर्धी होता है। ऐसा लगता है कि यह 50-50 है। मैं बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के लिए बहुत उत्साहित हूं। ऑस्ट्रेलिया ने 2014/15 के बाद से अपने घर में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी नहीं जीती है।

सुमित अंतिल ने लगातार दूसरी बार जीता गोल्ड मेडल, पैरा ओलंपिक खेलों में अपने नाम दर्ज किया बड़ा रिकॉर्ड

नईदिल्ली(एजेंसी)। भारत के प्रमुख पैरा एथलीट सुमित अंतिल ने पेरिस पैरालंपिक में शानदार प्रदर्शन करते हुए पुरुष भाला फेंक एफ64 वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। सुमित ने अपने दूसरे प्रयास में 70.59 मीटर का थ्रो किया, जो उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा और साथ ही यह पैरालंपिक का एक नया रिकॉर्ड भी बन गया। इस तरह, सुमित ने टोक्यो पैरालंपिक की अपनी स्वर्णिम सफलता को दोहराते हुए लगातार दूसरी बार स्वर्ण पदक जीता और अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। सुमित ने शुरुआत 69.11 मीटर के थ्रो से की, लेकिन दूसरे प्रयास में उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ थ्रो किया। तीसरे प्रयास में उन्होंने 66.66 मीटर, चौथे में फाउल, पांचवें में 69.04 मीटर और अंतिम प्रयास में 66.57 मीटर का थ्रो किया। वहीं, भारत के एक अन्य एथलीट संदीप ने एफ44 वर्ग में 62.80 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो किया और चौथे स्थान पर रहे, जबकि संदीप संजय ने इसी वर्ग में 58.03 मीटर का सर्वश्रेष्ठ थ्रो करते हुए सातवां स्थान हासिल किया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सुमित की स्वर्णिम सफलता पर उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि पेरिस पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतकर सुमित ने देश का मान बढ़ाया है, और उनकी इस उपलब्धि पर पूरे देश को गर्व है। उन्होंने यह भी कहा कि लगातार दो स्वर्ण पदक जीतकर सुमित एक विशिष्ट खिलाड़ियों के क्लब में शामिल हो गए हैं, जो युवाओं के लिए प्रेरणादायक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सुमित अंतिल की इस स्वर्णिम सफलता पर उन्हें बधाई दी। पीएम मोदी ने पेरिस पैरालंपिक में सुमित के प्रदर्शन को असाधारण बताते हुए कहा कि उन्होंने पुरुषों की जेवलिन एफ 64 स्पर्धा में शानदार निरंतरता और उत्कृष्टता दिखाई है। प्रधानमंत्री ने आगामी प्रतियोगिताओं के लिए भी सुमित को शुभकामनाएं दीं।

सुचारू यातायात के लिए करीब 100 टोल प्लाजा पर नजर रखेगा जीआईएस सॉफ्टवेयर

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) अब राष्ट्रीय राजमार्गों पर बिना किसी रुकावट या समस्या के यातायात की आवाजाही के लिए जीआईएस-आधारित सॉफ्टवेयर के साथ लगभग 100 टोल प्लाजा पर नजर बनाए रखेगा। इससे देश भर के टोल प्लाजा पर राष्ट्रीय राजमार्ग उपयोगकर्ताओं के लिए परेशानी मुक्त टोलिंग अनुभव सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी और यातायात भी बाधित नहीं होगा। राष्ट्रीय राजमार्ग हेल्पलाइन नंबर 1033 पर लोगों ने बहुत ज्यादा जाम की शिकायत की थी। इस आधार पर कुछ टोल प्लाजा को चिन्हित किया गया है। यह जानकारी सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने दी है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने कहा कि लाइव मॉनिटरिंग और ट्रैकिंग सिस्टम टोल प्लाजा पर वाहनों की कतार अधिक होने पर भीड़भाड़ संबंधी अलर्ट और खाली लेन के बारे में जानकारी देगा। जीआईएस-आधारित यह सॉफ्टवेयर एनएचएआई द्वारा प्रवर्तित कंपनी भारतीय राजमार्ग प्रबंधन कंपनी लिमिटेड (आईएचएमसीएल) ने विकसित किया गया है। इसकी शुरुआत के लिए एनएचएआई ने वेब-आधारित सॉफ्टवेयर पर लाइव मॉनिटरिंग के लिए लगभग 100 टोल प्लाजा की पहचान की है।

कैबिनेट ने मुंबई, इंदौर को रेल मार्ग से जोड़ने के लिए 18,036 करोड़ रुपये की परियोजना को दी हरी झंडी

नई दिल्ली(एजेंसी)। कैबिनेट ने सोमवार को मुंबई और इंदौर के वाणिज्यिक केंद्रों को सबसे छोटे रेल मार्ग से जोड़ने के लिए 18,036 करोड़ रुपये की 309 किलोमीटर लंबी नई रेलवे लाइन परियोजना को मंजूरी दे दी। 2028-29 तक पूरी होने वाली यह परियोजना महाराष्ट्र के दो जिलों और मध्य प्रदेश के चार जिलों के बीच की दूरी को भी पाट देगी। आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीईए) के अनुसार, परियोजना निर्माण के दौरान बड़ी संख्या में प्रत्यक्ष रोजगार भी पैदा होगा। इस परियोजना के साथ 30 नए स्टेशनों का निर्माण किया जाएगा, जिससे मध्य प्रदेश के बड़वानी के %आकांक्षी जिले% को कनेक्टिविटी मिलेगी। इंदौर और मनमाड के बीच नई लाइन लगभग 1,000 गांवों और लगभग 30 लाख आबादी को कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। रेलवे लाइन परियोजना जेएनपीए के गेटवे बंदरगाह और अन्य राज्य बंदरगाहों से पीथमपुर ऑटो क्लस्टर (90 बड़ी इकाइयां और 700 छोटे और मध्यम उद्योग) को सीधी कनेक्टिविटी प्रदान करेगी। सरकार ने कहा कि यह मध्य प्रदेश के बाजरा उत्पादक जिलों और महाराष्ट्र के प्याज उत्पादक जिलों को सीधी कनेक्टिविटी प्रदान करेगा, जिससे देश के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में इसके वितरण में सुविधा होगी। स्वीकृत परियोजना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नए भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप है जो क्षेत्र में व्यापक विकास के माध्यम से क्षेत्र के लोगों को आत्मनिर्भर बनाएगी जिससे उनके रोजगार और स्वरोजगार के अवसर बढ़ेंगे। यह मध्य भारत के साथ देश के पश्चिमी/दक्षिण-पश्चिमी भाग के बीच छोटा मार्ग प्रदान करके क्षेत्र में पर्यटन को भी बढ़ावा देगा। सरकार ने कहा कि इस नई लाइन से श्री महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर सहित उज्जैन-इंदौर क्षेत्र के विभिन्न धार्मिक स्थानों पर पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी। यह कृषि उत्पादों, उर्वरक, कंटेनर, लौह अयस्क, स्टील और सीमेंट आदि जैसी वस्तुओं के परिवहन के लिए एक आवश्यक मार्ग है। इस मार्ग के जरिए लगभग 26 एमटीपीए (मिलियन टन प्रति वर्ष) की अतिरिक्त माल ढुलाई होगी।

प्री डायबिटीज को नियंत्रित करने के लिए पौष्टिकता से जुड़ी गाइड

रायपुर। डॉ. रोहिणी पाटिल, एमबीबीएस एवं आहार विशेषज्ञ ने बताया द लैंसेट में डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार भारत में 13.6 करोड़ या आबादी का 15.3प्रतिशत हिस्सा प्री-डायबिटीज के साथ जी रहा है। 2017 से लेकर अब तक इसमें काफी ज्यादा वृद्धि हुई है, जब आबादी का लगभग 6-15प्रतिशत प्रीडायबिटिक था। भारत में प्री-डायबिटीज के बढ़ते मामलों के साथ, अपनी सेहत का ख्याल रखने के लिए सक्रिय कदम उठाना बेहद जरूरी है। स्वच्छ, समझदारी भरा भोजन, ब्लड शुगर के स्तर को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है और ये प्री-डायबिटीज को पलट भी सकता है। ब्लड शुगर डायबिटीज में बदले, इससे पहले ही इसे नियंत्रित करने के लिए डॉ. रोहिणी पाटिल, एमबीबीएस और आहार विशेषज्ञ ने अपने भोजन में कुछ जरूरी खाद्य पदार्थों को शामिल करना महत्वपूर्ण बताया है। प्री-डायबिटीज आहार में शामिल होने वाले खाद्य पदार्थः बादाम में भरपूर मात्रा में प्रोटीन, सेहतमंद फैट्स और फाइबर होते हैं, ये सभी ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। पिछले वर्ष डॉ. अनूप मिश्रा और डॉ. सीमा गुलाटी के प्रकाशित दो नए अध्ययनों में बताया गया कि अपने आहार में केवल बादाम को शामिल कर लेने से डायबिटीज का बोझ कम करने में मदद मिल सकती है। इतना ही नहीं अध्ययन किए गए लोगों में लगभग एक तिहाई लोगों में तीन महीने तक ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर से पहले बादाम लेने से प्रीडायबिटीज सामान्य ब्लड शुगर में तब्दील हो गया। डायबिटीज शोधकर्ताओं ने प्री-डायबिटीज से सामान्य ब्लड ग्लूकोज में आने को द होली ग्रेल ऑफमेडिसिन कहा है। इसलिए, डॉ. पाटिल अपने ब्लड शुगर को स्थिर करने और ओवरईटिंग कम करने के लिए हर रोज मुट्ठीभर बादाम खाने की सलाह देती हैं, चाहे आप इसे स्नैक के रूप में लें या सलाद और दही में मिलाकर खायें। हरी पत्तेदार सब्जियां जैसे पालक, मेथी और अमरनाथ में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम होती है और इनमें फाइबर उच्च मात्रा में होता है। इस वजह से ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित करने के लिए अपने खाने में इनको शामिल करना अच्छा विकल्प है।

एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने अपनी 1000वीं शाखा की शुरुआत की

रायपुर : भारत के गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) क्षेत्र की एक प्रमुख कंपनी एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट कं. लि. ने वाशी, नवी मुंबई में अपनी 1000वीं शाखा खोलने की घोषणा की है। यह ऐतिहासिक घटना देश भर में अपने पदचिन्हों का विस्तार करने और कम पहुंच वाले बाजारों में वित्तीय सेवाएं लाने के प्रति कंपनी की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को चिन्हित करने के लिए, एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट ने इंडिया पोस्ट के साथ मिलकर एक विशेष कवर और माई स्टैम्प जारी किया है। आधिकारिक अनावरण के अवसर पर मुंबई में जापान के महावाणिज्य दूतावास के महावाणिज्यदूत श्री यागी कोजी, महाराष्ट्र सर्किल में डाक सेवाओं (मुख्यालय) के निदेशक श्री अभिजीत बंसोडे और एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के सीईओ और एमडी श्री शांतनु मित्रा उपस्थित थे। इस महत्वपूर्ण अवसर पर विचार करते हुए, एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के सीईओ और एमडी श्री शांतनु मित्रा ने कहा, हमारी 1000वीं शाखा का उद्घाटन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जो पूरे भारत में लोगों को औपचारिक ऋण पहुंच प्रदान करने और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में उनकी मदद करने के लिए हमारी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस उपलब्धि का उत्सव मनाते हुए, हमें डाक विभाग के सहयोग से माई स्टैम्प के साथ एक विशेष कवर जारी करने पर गर्व है, जो कंपनी द्वारा अब तक हासिल की गई वृद्धि और भारत के वित्तीय सेवा क्षेत्र में योगदान के महत्व का प्रतीक है। हमारी यात्रा निरंतर विकास की रही है, हम अपने ग्राहकों की बदलती जरूरतों के अनुकूल होने के साथ ही सभी को वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराने और पूर्ण विकास हासिल करने के हमारे मिशन के प्रति निष्ठावान रहे हैं। 1000वीं शाखा का शुभारंभ एसएमएफजी इंडिया क्रेडिट के बड़े और विविध भारतीय बाजार में अपनी उपस्थिति को गहरा करने के नीतिगत दृष्टिकोण का प्रमाण है। 2007 में अपनी स्थापना के बाद से, कंपनी लगातार विकास करते हुए एक अखिल भारतीय संस्थान के रूप में विकसित हुई है जो अब 670 से अधिक शहरों और 70,000 गांवों में काम करती है, जिसे 23,000 से अधिक कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त है।

कार्यालय कार्यपालन अभियन्ता
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग दन्तेवाड़ा, जिला दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा (छ.ग.)
मो.नं.- 09424160732 ई मेल पता:- ee-res.Dantewada@nic.in

// मैनुअल पद्धति निविदा सूचना प्रथम बार //
-: निविदा क्रमांक-04 :-
क्रमांक / 891 / व.ले.लि./ग्रा.यां. सेवा/2024, दन्तेवाड़ा दिनांक- 30/08/2024

1. एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्यों हेतु मैनुअल निविदा दिनांक 19/09/2024 तक आमंत्रित की जाती है :-

स. क्र.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रू. लाख में)
1	2	3
01	छात्रावास भवन की मरम्मत एवं रंगाई पोताई कार्य परचेली एवं छात्रावास भवन एवं खिड़की दरवाजा की मरम्मत कार्य परचेली व छात्रावास भवन में शौचालय मरम्मत एवं बोर खनन कार्य परचेली (विद्युतीकरण छोड़कर) विकासखंड-कटेकल्याण	37.00 लाख

2. उपरोक्त निर्माण कार्यो की निविदा की सामान्य शर्ते, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी विभागीय वेब साईट http://res.cg.gov.in में दिनांक 05/09/2024 से 13/09/2024 तक निशुल्क डाऊनलोड की जा सकती हैं।

कार्यपालन अभियन्ता
ग्रामीण यांत्रिकी सेवा संभाग दन्तेवाड़ा
जिला दक्षिण बस्तर दन्तेवाड़ा (छ.ग.)

G-242502164/2

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, गुरुवार 05 सितंबर 2024

राज्यपाल से अग्रवाल सभा के प्रतिनिधि मंडल ने सौजन्य भेंट की

रायपुर (विसं)। राज्यपाल श्री रमेन डेका से आज यहां राजभवन में अग्रवाल सभा रायपुर के अध्यक्ष श्री विजय अग्रवाल के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने सौजन्य मुलाकात की। उन्होंने समाज की ओर से माला और शाल पहनाकर राज्यपाल का स्वागत किया और समाज के कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल होने हेतु उन्हें आमंत्रित किया। इस अवसर पर अग्रवाल सभा के पदाधिकारी श्री मनीष अग्रवाल, श्री योगी अग्रवाल, श्री राम अग्रवाल, श्री आयुष अग्रवाल, श्री विकास अग्रवाल, श्री सुधीर अग्रवाल उपस्थित थे।

सिकंदराबाद रेल मंडल के अंतर्गत नई लाइन कमीशनिंग हेतु प्री-एनआई व एनआई का कार्य, कुछ गाड़ियों का परिचालन रहेगा प्रभावित

बिलासपुर (विश्व परिवार)। रेलवे प्रशासन द्वारा अधोसंरचना विकास के कार्यों को शीघ्र पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। इसी संदर्भ में अधोसंरचना विकास हेतु दक्षिण मध्य रेलवे के सिकंदराबाद मंडल के अंतर्गत विजयवाड़ा-काजीपेट-बल्लारशाह सेक्शन के विभिन्न स्टेशनों में नई लाइन कमीशनिंग हेतु प्री-एनआई व एनआई का कार्य किया जायेगा। इस कार्य के फलस्वरूप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से संबन्धित निम्न यात्री गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। प्रभावित होने वाली गाड़ियों का विवरण इस प्रकार है-

रद्द होने वाली गाडियां- दिनांक 27 सितंबर एवं 01 व 04 अक्टूबर 2024 को यशवंतपुर से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12251 यशवंतपुर-कोरबा वेनगंगा एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 29 सितंबर एवं 03 व 06 अक्टूबर 2024 को कोरबा से रवाना होने वाली गाडी संख्या 12252 कोरबा-यशवंतपुर वेनगंगा एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 25 व 28 सितंबर एवं 02 व 05 अक्टूबर 2024 को कोरबा से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22647 कोरबा-कोचुवेली एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 23, 26 व 30 सितंबर एवं 03 अक्टूबर 2024 को कोचुवेली से रवाना होने वाली गाडी संख्या 22648 कोचुवेली-कोरबा एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 23 व 30 सितंबर 2024 को सिकंदराबाद से रवाना होने वाली गाडी संख्या 07005 सिकंदराबाद - रक्सौल एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 26 सितंबर एवं 03 अक्टूबर 2024 को रक्सौल से रवाना होने वाली गाडी संख्या 07006 रक्सौल- सिकंदराबाद एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 28 सितंबर एवं 05 अक्टूबर 2024 को हैदराबाद से रवाना होने वाली गाडी संख्या 07051 हैदराबाद - रक्सौल एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 01 एवं 08 अक्टूबर 2024 को रक्सौल से रवाना होने वाली गाडी संख्या 07052 रक्सौल- सिकंदराबाद एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 23, 25 व 30 सितंबर एवं 02 अक्टूबर 2024 को पटना से रवाना होने वाली गाडी संख्या 03253 पटना - सिकंदराबाद एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 25 सितंबर एवं 02 अक्टूबर 2024 को हैदराबाद से रवाना होने वाली गाडी संख्या 07255 हैदराबाद - पटना एक्सप्रेस रद्द रहेगी। दिनांक 27 सितंबर एवं 04 अक्टूबर 2024 को सिकंदराबाद से रवाना होने वाली गाडी संख्या 07256 सिकंदराबाद - पटना एक्सप्रेस रद्द रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली गाड़ियां- दिनांक 01 अक्टूबर 2024 को दरभंगा से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 17008 दरभंगा - सिकंदराबाद एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग व्हाया पेद्दपल्ली - निजामाबाद के रास्ते सिकंदराबाद पहुंचेगी। दिनांक 24 सितंबर 2024 को रक्सौल से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 07052 रक्सौल - सिकंदराबाद एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग व्हाया पेद्दपल्ली - निजामाबाद के रास्ते सिकंदराबाद पहुंचेगी।

देरी से रवाना होने वाली गाड़ियां- दिनांक 06 अक्टूबर 2024 को रक्सौल से रवाना होने वाली गाड़ी संख्या 17006 रक्सौल-हैदराबाद एक्सप्रेस 02 घंटे देरी से रवाना होगी।

पत्रकारिता विश्वविद्यालय में पेड़ लगाने पर विद्यार्थियों को मिलेंगे अंक

केटीयू में 'एक पेड़ मां के नाम' वृक्षारोपण महाअभियान

विश्वविद्यालय परिसर में लगाए गए फलदार एवं औषधीय महत्व के पौधे

रायपुर (विश्व परिवार)। कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर में रेडियो संवाद 90.8 एफएम एवं अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के संयुक्त तत्वावधान में एक पेड़ मां के नाम महावृक्षारोपण अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर को हराभरा बनाने के लिए अनेक फलदार एवं औषधीय महत्व के पौधे लगाये गए।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव भाई शर्मा ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी एवं कर्मचारी पेड़ लगाएं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थी उनके द्वारा लगाए गए पेड़ों का संरक्षण भी करेंगे। इसके लिए उनके सतत् मूल्यांकन गतिविधियों के अंतर्गत पेड़ लगाना और संरक्षण के लिए अंक भी मिलेंगे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा महिला प्रकोष्ठ, छतीसगढ़ इकाई की अध्यक्ष मंजू यदु ने कहा कि पेड़ लगाना हमारी प्रतिबद्धता है। हमें सभी नागरिकों को उनके जन्म दिवस के अवसर पर पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही पेड़ के संरक्षण के लिए वे सभी जरुरी उपाय किये जाएं, जो आवश्यक होने चाहिए। इस अवसर पर ब्रिगेडियर प्रदीप यदु ने कहा कि व्यक्ति का पहला कर्तव्य अपने परिवेश को हरा-भरा रखना है। उन्होंने कहा कि देश के सभी केंटोमेंट एरिया व्यवस्थित और हरेभरे होते हैं। सेना प्रकृति के संरक्षण पर विशेष जोर देती है। इसलिए सभी नागरिकों को वृक्षारोपण महाअभियान में आगे आकर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए।

कुलसचिव सुनील कुमार शर्मा ने कहा कि प्रकृति के संरक्षण के लिए वृक्षारोपण महाअभियान में हम सभी की भागीदारी जरुरी है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. नरेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि एक पेड़ मां के नाम महाअभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण का कार्यक्रम विश्वविद्यालय परिसर में किया गया है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए पत्रकारिता के विद्यार्थियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया है। साथ ही इन वृक्षों के संरक्षण की जिम्मेदारी भी विद्यार्थियों द्वारा ली गई है।

कार्यक्रम में अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा महिला प्रकोष्ठ से कल्पना यदु, अंजू यदु सहित महिला प्रकोष्ठ के पदाधिकारी एवं विश्वविद्यालय के उपकुलसचिव सौरभ शर्मा, प्राध्यापक पंकज नयन पाण्डेय, डॉ. शहीद अली, डॉ. नृपेन्द्र शर्मा, डॉ. आशुतोष मंडावी, डॉ. राजेंद्र मोहंती, शैलेन्द्र खंडेलवाल, चन्द्रशेखर शिवहरे सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आंजनेय यूनिवर्सिटी में 'फैशन नाउ एंड हाउ' इवेंट 5 और 6 सितंबर को आयोजित

रायपुर (विश्व परिवार)। आंजनेय यूनिवर्सिटी में 'फैशन नाउ एंड हाउ' इवेंट 5 और 6 सितंबर को मुख्य कैंपस समय- सुबह 10 बजे से नरदहा रायपुर में आयोजित किया जा रहा है। इस दो-दिवसीय इवेंट में फैशन प्रेमियों के लिए एक खास अनुभव होगा, जिसमें रोमांचक गतिविधियाँ और शानदार शोकेस शामिल होंगे। दो दिनों तक चलने वाले वर्कशॉप में प्रतिभागी फैशन की दुनिया में नवीनतम ट्रेंड्स और आवश्यक जानकारियों का अनुभव करें। इवेंट में मुख्य आकर्षण मुंबई से आए हुए डिज़ाइनर और इंटरप्रेन्योर मासूमी मेवावाल्ला और हर्ष गुप्ता के शीर्ष डिज़ाइन की नवीनतम डिज़ाइन वाले फैशन शो, फैशन स्टाइलिंग साथ ही के साथ इंटरैक्टिव सेशन होगा जिसमें प्रतिभागी प्रश्न पूछ सकेंगे। वर्कशॉप से जुड़ने रजिस्ट्रेशन अनिवार्य। रजिस्ट्रेशन ऑनलाइन अथवा यूनिवर्सिटी कैंपस में किया जा सकता है।

कैरियर को नई दिशा देने बालिकाओं ने नर्सिंग प्रवेश परीक्षा दी

बचेली (विश्व परिवार)। एनएमडीसी, बचेली ने सामाजिक दायित्व को बखूबी निभाते हुए दिनांक 04.09.2024 को बालिका शिक्षा योजना अंतर्गत बीएससी व जीएनएम नर्सिंग की प्रवेश परीक्षा का आयोजन डी. ए. व्ही पब्लिक स्कूल, बचेली में आयोजन किया। इस लिखित परीक्षा के लिए 23.07.2024 को विभिन्न अख़बारों में सूचना प्रेषित की गयी थी।

इस परीक्षा के उपरांत चयनित छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया जायेगा जिसके परिणाम के आधार पर जो छात्राएं स्वास्थ्य परीक्षण में स्वस्थ पाई जाऐंगी उनको नर्सिंग की पढ़ाई हेतु अपोलो कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग में भेजा जाऐगा।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि इन छात्राओं का संपूर्ण खर्च जैसे पढ़ाई किताबें, प्रेक्टिकल, यूनिफार्म, हॉस्पिटल एवं भोजन इत्यादि सुविधाओं का प्रबंधन एनएमडीसी द्वारा किया जायेगा।

सीमंधर स्वामी जैन मंदिर में अष्टप्रकारी पूजा कर महावीर का जन्मोत्सव मनाया, पालना जी झुलाए

बाजे कुण्डलपुर में बधाई, कि वीर जन्मे महावीर जी-महावीर जन्मोत्सव पर राहुल झाबक, शीतल चौरड़िया व ऋचा बरलोटा ने सजाई सुरमयी भक्ति

रायपुर (विश्व परिवार)। खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वर जी द्वारा प्रतिष्ठित श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर भैरव सोसायटी में महावीर जन्मवांचन के अवसर पर पालना महोत्सव व 14 स्वप्नों का पूजन धूमधाम से किया गया। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर व दादाबाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष संतोष बैद व महासचिव महेन्द्र कोचर ने बताया कि जब भगवान महावीर स्वामी मातारानी त्रिशला के गर्भ में आते हैं उस रात्रि माता 14 महास्वप्न देखती है। 14 स्वप्नों के साथ कल्प वृक्ष व महावीर स्वामी के पालना जी का अष्टप्रकारी पूजन कर महोत्सव मनाया गया। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर में पालना जी को बधाने के लाभार्थी स्व डॉ हेमराज जी बरड़िया के आत्मश्रेयार्थ मातुश्री विमला देवी की प्रेरणा से अशोक जी किशोर जी मनीष जी बरडिया, आम्रपाली सोसाइटी रायपुर परिवार ने लिया। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर व दादाबाड़ी भैरव सोसाइटी से परमात्मा के पालना जी गाजे बाजे के साथ किशोर बरड़िया परिवार के निवास स्थल आम्रपाली सोसायटी शोभायात्रा श्रीसंघ सह बधाए गए।

श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर व दादाबाड़ी ट्रस्ट द्वारा किशोर बरड़िया परिवार का अभिनन्दन किया गया। सी ए किशोर बरड़िया, आम्रपाली निवास में भगवान महावीर स्वामी के पालना जी की भक्ति में जैन भजन सम्राट राहुल झाबक के भजनों पर श्रद्धालु झूमने लगे, बाजे कुण्डलपुर में बधाई, कि वीर जन्मे महावीर जी, महावीर जन्मोत्सव पर राहुल झाबक, शीतल चौरड़िया व ऋचा बरलोटा ने सजाई सुरमयी भक्ति संध्या जिसमें रायपुर सकल श्रीसंघ ने भाग लिया। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर भैरव सोसायटी में पर्युषण पर्व के अंतर्गत आज महावीर जन्मवांचन के अवसर पर शीतल चोरड़िया व ऋचा बरलोटा की युगल जोड़ी ने भक्ति गीतों की प्रस्तुति दी। जिसके लाभार्थी राजेश जी करुणा जी सिंघी परिवार हैं। प्रतिदिन दादागुरुदेव इक्तिसा जाप व प्रभु भक्ति कार्यक्रम का संयोजन खरतरगच्छ महिला परिषद राष्ट्रीय संगठन मंत्री मंजू कोठारी द्वारा किया जा रहा है।

एम्स, रायपुर के छात्र ने मेडसीकॉन 2024 दिल्ली में अर्जित की उपलब्धियाँ

रायपुर (विश्व परिवार)। एम्स, रायपुर के एमबीबीएस 2020 बैच के छात्र सोहन पैकरे ने दिल्ली के वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा छात्र सम्मेलन मेडसीकॉन 2024 में एम्स, रायपुर का प्रतिनिधित्व करते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं में जीत हासिल की और संस्थान का नाम रोशन किया। देशभर से आए चिकित्सा छात्रों के मध्य आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सोहन ने निम्न उपलब्धियां अर्जित की। कनेक्ट द डॉट क्विज- नेक्सस प्लेक्सस में प्रथम स्थान। डिबेट में उपविजेता। क्लिनिकल फोटो निबंध में उपविजेता। अकादमिक क्विज में तृतीय स्थान। सोहन की उपलब्धियों ने संस्थान को विशेष पहचान दिलाई है। एम्स, रायपुर के कार्यपालक निदेशक और सीईओ, लेफ्टिनेंट जनरल अशोक जिंदल (सेवानिवृत्त) और अन्य संकाय सदस्यों ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई दी।

अदाणी फाउंडेशन ने आयोजित किया पशु स्वास्थ्य शिविर और जागरुकता कार्यक्रम

शिविर में 90 से अधिक पशुपालकों के 1200 से अधिक पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर नि:शुल्क दवाइयां की गई वितरित

पशुपालन जागरूकता कार्यक्रम में 250 से अधिक पशुपालक हुए शामिल

रायगढ़ (विश्व परिवार)। अदाणी फाउंडेशन द्वारा जिले के पुसौर विकासखंड में किसानों के पशुधनों के लिए स्वास्थ्य शिविर एवं नस्ल सुधार जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अदाणी पावर लिमिटेड रायगढ़ के सामाजिक सहभागिता के तहत पास के ग्रामों में देशी गायों में नस्ल संवर्धन और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए आयोजित शिविर का उद्देश्य पशुपालकों की आय में वृद्धि कराना था। अदाणी फाउंडेशन के मार्गदर्शन में पशुधन विकास के क्षेत्र में अग्रणी संस्था बायफ द्वारा बीते सोमवार को ग्राम अमलीभौना, चंदली, कलमा, छोटे भंडार और ठेंगागुढ़ी में नि:शुल्क पशु स्वास्थ्य जांच एवं उपचार शिविर सहित पशुपालकों के लिए डेयरी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शिविर में कुल 93 पशुपालकों के 1216 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें नि:शुल्क दवाइयां दी गयी। साथ ही किसानों को कृत्रिम गर्भाधान और पशुपालन के संबंध में जागरूक करने हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें कुल 261 पशुपालकों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि अदाणी पावर लिमिटेड, रायगढ़ के परिधीय ग्रामों के कृषकों को बायफ संस्था द्वारा पशुधन विकास योजना के लाभों से अवगत कराया जा रहा है। गायों में कृत्रिम गर्भाधान कर उन्नत नस्ल के पशुओं का विकास, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, हरे चारे का उत्पादन, और समय-समय पर स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन इस योजना के मुख्य अंग हैं। इस दौरान चारा प्रबंधन और विकास के लिए परिधीय 6 ग्रामों के कुल 38 पशुपालकों को 200 किलोग्राम झुनगा (ष्श2श्चद्गड्ड) और 100 किलोग्राम बाजरे का वितरण किया गया है। इस कार्यक्रम के तहत अब तक कुल 254 कृत्रिम गर्भाधान किए गए हैं, जिनमें 219 वर्गीकृत और 35 पारंपरिक गर्भाधान शामिल हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप कुल 75 उन्नत नस्ल के पशुओं का जन्म हुआ, जिनमें 53 बछिया शामिल हैं। इस कार्यक्रम से कुल 75 पशुपालक लाभान्वित हुए हैं।

इस अवसर पर ग्राम चंदली की सरपंच श्रीमती सुशीला निषाद ने कहा, इस तरह के कार्यक्रम हमारे गांव के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो रहे हैं। अदाणी फाउंडेशन और बायफ संस्था के इस प्रयास से हमारे पशुधन में सुधार हो रहा है और हम भविष्य में अपनी आय बढ़ाने के लिए आशान्वित हैं।

ग्राम अमलीभौना के उपसरपंच प्रतिनिधि श्री मनोज सिदार ने भी इस पहल की सराहना करते हुए कहा, यह कार्यक्रम पशुपालकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित हो रहा है। इससे हमारे गांव के लोग अपने पशुओं की बेहतर देखभाल कर पा रहे हैं, जिससे दुग्ध उत्पादन में भी वृद्धि हो रही है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354